मौसम
सूर्योदय - 6:08 AM
सूर्योस्त - 6:41 PM
अधिकतम - 37°C
न्यूनतम - 22°C

न्यूज़लाइन नेटवर्क

(सच खबर, सब पर नज़र)

दिल्ली से प्रकाशित तथा उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, हरियाणा से प्रसारित

RNI No.-DELHIN/2015/64975 | वर्ष - 09 अंक - 298 | नई दिल्ली, सोमवार 24 मार्च 2025 | मूल्य-5 रुपए, पेज संख्या-8

संभल हिंसा में ऐक्शन, वकील जफर अली गिरफ्तार

- जामा मस्जिद के सदर को सुबह घर से उठाया

संभल (एजेंसी)। संभल हिंसा के 4 महीने बाद जामा मस्जिद के सदर जफर अली को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले पुलिस ने जफर अली को रविवार सुबह 11 बजे घर से उठाया। करीब 4 घंटे कोतवाली में पूछताछ की। जफर अली को अब चंदौसी कोर्ट ले जाया गया है। वहीं, जफर अली की गिरफ्तारी के बाद उनके साथी अधिवक्ता पुलिस की गाड़ी के पीछे भागने लगे। लोगों ने जफर अली

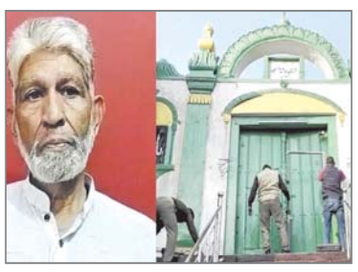

जिंदाबाद के नारे लगाए। जफर अली का घर मस्जिद से 100 मीटर दूर है। तनाव को देखते हुए इलाके में 200 से ज्यादा जवान तैनात किए गए हैं। 5 थानों की फोर्स भी जामा मस्जिद इलाके में पहुंच गई है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि दंगा भड़काने की साजिश रचने में जफर अली को गिरफ्तार किया गया है। संभल में 24 नवंबर को जामा मस्जिद सर्वे के दौरान हिंसा हुई थी। इसी मामले में एसआईटी प्रभारी कुलदीप सिंह, एसीपी (उत्तरी) श्रीचंद्र और सीओ संभल अनूप चौधरी उनसे सवाल-जवाब किए। इससे पहले, हिंसा के एक दिन बाद यानी 25 नवंबर को पुलिस ने जफर को उठाया था और कोतवाली में उनसे पूछताछ की थी।

पंजाब की जेल में आएगा सांसद अमृतपाल सिंह

- एपी सरकार ने एनएसए नहीं बढ़ाया, लाने की तैयारी

अमृतसर (एजेंसी)। असम की डिब्रूगढ़ जेल में बंद पंजाब के खालिस्तान समर्थक सांसद अमृतपाल सिंह को पंजाब की जेल में लाया जा सकता है। पंजाब सरकार ने अमृतपाल पर लगे राष्ट्रीय सुरक्षा कानून की अवधि को बढ़ाने के कोई आदेश जारी नहीं किए हैं। इसकी अवधि बीते शनिवार यानी 22 मार्च को ही समाप्त हो चुकी है। अमृतपाल के साथ उसके 2 अन्य साथियों पप्पलप्रीत सिंह और वरिंदर विक्की से भी एनएसए हटाई जा सकती है। इससे पहले हाल ही में अमृतपाल के 7 साथियों को

डिब्रूगढ़ जेल से पंजाब लाया जा चुका है। पंजाब के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अभी तक अमृतपाल और उनके साथियों की एनएसए की अवधि बढ़ाने या इससे संबंधित कोई अन्य आदेश जारी नहीं हुआ है। इससे साफ है कि पंजाब सरकार अब अमृतपाल सिंह पर शिकंजा कसने की तैयारी में है। पंजाब सरकार अमृतपाल सिंह और उसके 2 अन्य साथियों पप्पलप्रीत सिंह और वरिंदर विक्की को पंजाब के अमृतसर लाकर 2023 में अजनाला थाने पर हुए हमले की जांच में शामिल कर सकती है। पंजाब सरकार 21 मार्च को अमृतपाल सिंह के 7 साथियों को लेकर अमृतसर पहुंची और उन्हें कोर्ट में पेश कर रिमांड हासिल किया।

शाह का पश्चिम बंगाल दौरा फिर टला

पहले पूर्वी मेदिनापुर और अब कोलकाता दौरा भी हुआ रद्द

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में बीजेपी के संगठन की स्थिति का जायजा लेने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पहुंचने वाले थे। उनका यह दौरा कुछ समय के लिए टाल दिया गया

- बंगाल में अगले साल चुनाव को लेकर पार्टी की बड़ी तैयारी

है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय राज्य मंत्री सुकांत मजूमदार ने बताया कि अमित शाह का 29-30 मार्च का दौरा प्रस्तावित थी लेकिन फिलहाल वह बंगाल नहीं आ रहे हैं। इसके पीछे ईद होना बताया जा रहा है। पहले तय कार्यक्रम के

अनुसार, केंद्रीय मंत्री अमित शाह को 29 मार्च की रात कोलकाता पहुंचना था। उन्हें 30 मार्च को पार्टी की कई संगठनात्मक बैठकों में भाग लेना था। 30 की रात तक कई कार्यक्रमों और मीटिंग में भाग लेने के बाद रात में उन्हें दिल्ली वापस लौटना था। सुकांत मजूमदार ने बताया कि ईद के त्योहार के कारण दौरा स्थगित कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि लेकिन निश्चित रूप से वह (अमित शाह) बहुत जल्द राज्य का दौरा करेंगे। बदली हुई तारीख जल्द ही घोषित की जाएगी। बंगाल बीजेपी अध्यक्ष ने यह भी कहा कि अगले साल होने वाले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों को देखते हुए न केवल केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, बल्कि बीजेपी के अन्य केंद्रीय नेता भी आने वाले दिनों में राज्य का दौरा करेंगे। यह पहली बार नहीं है जब केंद्रीय गृह मंत्री का पश्चिम बंगाल दौरा टाला गया है। इससे पहले जनवरी में अमित शाह को पूर्वी मिदनापुर जिले में एक जनसभा को संबोधित करना था।

सीबीआई की रिपोर्ट, सुशांत केस में हत्या के सबूत नहीं

रिया के वकील बोले-झूठी कहानियां बनाई गईं, परिवार चुप रहकर सब सहता रहा

मुंबई (एजेंसी)। सुशांत सिंह राजपूत डेथ केस में सीबीआई ने 4 साल 6 महीने 15 दिन बाद फाइनल क्लोजर रिपोर्ट फाइल की है। जिसमें जांच एजेंसी ने कहा है कि आत्महत्या के लिए सुशांत को उकसाने का कोई सबूत नहीं मिला है। सुशांत सिंह राजपूत 14 जून 2020 को बांद्रा में अपने घर पर रहस्यमय तरीके से मृत पाए गए थे। मीडिया और विपक्षी दलों के प्रेशर की वजह से इस मामले की जांच को सीबीआई को सौंपा गया। अब सीबीआई की आखिरी रिपोर्ट में मौत की असल वजह सुसाइड ही बताई गई है। इस मामले में रिया चक्रवर्ती को 27 दिन जेल में रहना पड़ा था। सीबीआई की तरफ से फाइनल रिपोर्ट सामने आने के बाद रिया के वकील सतीश मानेशिंदे ने बयान जारी कर कहा कि इस मामले में कई झूठी कहानियां बनाई गईं। इसके बावजूद रिया और उनका परिवार चुप रहकर सब सहता रहा। रिया पर आत्महत्या के लिए उकसाने, धोखाधड़ी और पैसों के हेरफेर के आरोप लगाए गए थे।

भारत अपनी 'भारत पहले' नीति पर रहेगा कायम

- विदेश मंत्री जयशंकर बोले-फायदा-नुकसान देखना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत की मुक्त व्यापार रणनीति पर बात की है। उन्होंने ट्रेड पॉलिसी से जुड़े कई पहलुओं पर से पर्दा उठाया है। बिजनेस टुडे के एक कार्यक्रम में विदेश मंत्री ने कहा कि मुक्त व्यापार समझौते

हमेशा से भारत के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं। अब तो ये और भी जरूरी हो गए हैं। भारत इस बात को समझता है। फिलहाल, भारत तीन महत्वपूर्ण समझौतों पर काम कर रहा है। ये समझौते यूरोपीय संघ, ब्रिटेन और अमेरिका के साथ हैं। न्यूजीलैंड के साथ भी बातचीत शुरू हो गई है। कुछ और समझौते भी पाइपलाइन में हैं।

मेहुल चोकसी को भारत लाने की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गीतांजलि जेम्स के मालिक और 13,850 करोड़ रुपए के बैंक घोटाले के मुख्य आरोपी मेहुल चोकसी अपनी पत्नी प्रीति चोकसी के साथ बेल्जियम में रह रहा है। ये

- पत्नी के साथ बेल्जियम में रह रहा, 13,850 करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप

बेल्जियम के एंटवर्प शहर में रेजीडेंसी कार्ड पर रह रहें है। पंजाब नेशनल बैंक घोटाले के बाद 2018 में भारत से एंटीगुआ-बारबूडा भाग गया था। चोकसी को भारत लाने के लिए अधिकारियों ने बेल्जियम सरकार से प्रत्यर्पण प्रक्रिया शुरू करने की मांग की है। मेहुल चोकसी और

नीरव मोदी पर पंजाब नेशनल बैंक की मुंबई स्थित ब्रेडी हाउस ब्रांच में 13,850 करोड़ रुपए का घोटाला करने का आरोप है। इससे पहले चोकसी ने पासपोर्ट सस्पेंड होने के कारण भारत नहीं लौट पाने का बहाना बनाया था। 2018 में भारत छोड़ने से पहले ही चोकसी ने 2017 में ही एंटीगुआ-बारबूडा की नागरिकता ले ली थी। मेहुल चोकसी बार- बार खराब सेहत का हवाला देकर भारत में पेशी पर आने से इनकार देता था। कभी-कभी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए ही उसकी पेशी होती है। भारत में उसकी कई संपत्तियां भी जब्त की जा चुकी हैं। चोकसी मई 2021 में एंटीगुआ से गायब होकर पड़ोसी देश डोमिनिका पहुंच गया था। यहां उसे अरेस्ट कर लिया गया। एनआईए की एक टीम उसका प्रत्यर्पण कराने के लिए डोमिनिका पहुंची, लेकिन इसके पहले ही ब्रिटिश क्वीन की प्रिवी काउंसिल से उसे राहत मिल गई। बाद में उसे फिर एंटीगुआ के हवाले कर दिया गया। हालांकि, डोमिनिका की जेल में मेहुल चोकसी को 51 दिन गुजारने पड़े थे। यहां उसने दलील दी थी कि वो एंटीगुआ जाकर वहां के एक न्यूरोलॉजिस्ट से ट्रीटमेंट कराना चाहता है।

यमुना की सफाई को लेकर तगड़े ऐक्शन की तैयारी

- कार धोने के साबुन और डिटर्जेंट पर रोक लगाएगी दिल्ली सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार यमुना नदी को साफ करने के लिए एक बड़ा कदम उठाने जा रही है। सरकार कार धोने के लिए इस्तेमाल होने वाले साबुन और डिटर्जेंट पर रोक लगाने की सोच रही है। दरअसल इन प्रोडेक्ट्स में फॉस्फेट और सर्फेक्टेंट होते हैं। ये नाले में जाते हैं और फिर यमुना में मिल जाते हैं। जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा

है कि नदी को साफ करने के लिए ऐसे सख्त कदम उठाने जरूरी हैं। सरकार इस रोक को लागू करने के लिए नगर निगम की मदद ले सकती है। सरकार लोगों को कार धोने वाले उत्पादों के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान के बारे में जागरुक करने के लिए अभियान भी चलाएगी। इसके साथ ही, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के पास कार धोने के सेंटर खोलने की योजना है। यहां ट्रीटेड पानी से गाड़ियां धोई जा सकेंगी। बता दें कि बीजेपी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में यमुना को साफ करने का वादा किया था। अब उसे वादे को पूरा करने का दबाव है। जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा, हम यमुना को साफ करने के लिए बहुत गंभीर हैं और हमें इसके लिए सबका साथ चाहिए।

जज कैश केस में सुप्रीम कोर्ट ने जारी की जांच रिपोर्ट

नोटों के फोटो-वीडियो वेबसाइट पर डाले, काम देने पर रोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने 22 मार्च की देर रात दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के घर से मिले कैश की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक कर दी। इसमें कैश का वीडियो भी है। साथ ही तीन तस्वीरें भी जारी की गई हैं। इसमें 500 रुपए के जले हुए नोटों के बंडल दिखाई दे

- मोबाइल रिकॉर्ड की जांच होगी, तीन तस्वीरें भी की गईं जारी

रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया कि 14 मार्च को जस्टिस के घर आग लगने के बाद फायर ब्रिगेड की टीम वहां पहुंची थीं। आग पर काबू पाने के बाद 4-5 अधजली बोरियां मिलीं, उनके अंदर नोट भरे हुए थे। रिपोर्ट में जस्टिस वर्मा का पक्ष भी

है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जिस स्टोर रूम में नोटों की गड्डियां मिलने की बात की जा रही है, वहां उन्होंने या उनके परिवार ने कभी कोई पैसा नहीं रखा। वो एक ऐसी खुली जगह है, जहां हर किसी का आना जाना होता है। उन्हें इस मामले में फंसाया जा रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय ने इंटरनल इन्क्वायरी के बाद सुप्रीम कोर्ट को 21 मार्च को रिपोर्ट सौंपी थी।

पुलिस की रिपोर्ट: जज के पीए ने दी आग लगने की सूचना

भारतीय मुद्रा पुलिस ने हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को दी रिपोर्ट में कहा है कि 14 मार्च रात 11.45 बजे पीसीआर को जस्टिस वर्मा के 30, तुगलाक क्रेसेंट बंगले में आग लगने की जानकारी मिली। दो दमकल वाहनों को बुलाया गया। आग कोठी की चारदिवारी के कोने में स्थित कमरे में लगी। इन्हीं से लगे कमरे में सुरक्षाकर्मी रहते हैं। शॉर्ट सर्किट से लगी आग पर तुरंत काबू पाया गया। आग बुझने के बाद कमर में अधजले नोट से भरी 4-5 अधजली बोरियां मिलीं। आग की जानकारी जज के निजी सचिव ने दी। जस्टिस वर्मा को कोई भी काम न सौंपने का आदेश 22 मार्च को सीजेआई संजीव खन्ना ने जस्टिस वर्मा पर लगे आरोपों की इंटरनल जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति बनाई थी।

भारत भी बनाएगा 6 पीढ़ी के जेनरेशन लड़ाकू विमान

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एफ-47 एनजीएडी छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण की घोषणा कर दी है। अमेरिकी सरकार ने इसके लिए 20 अरब डॉलर का शुरुआती बजट लड़ाकू विमानों का निर्माण करने वाली कंपनी बोइंग को दिया है। इस बजट में इस

- ट्रायल फेज में पहुंच गया है एएमसीए का जेट प्रोग्राम, होगा ताकतवर

फाइटर जेट के लिए रिसर्च एंड डेवलपमेंट का काम होगा, जिसके तहत इंजन का निर्माण किया जाएगा, नये कम्युनिकेशन सिस्टम, रडार सिस्टम, एवियोनोमिक्स समेत कई तरह के डेवलपमेंट्स और किए जाएंगे। यानि अमेरिका दुनिया का पहला ऐसा देश बन सकता है, जिसके पास अपना छठी पीढ़ी का लड़ाकू विमान होगा। हालांकि चीन भी जे-36 छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान के प्रोटोटाइप का खुलासा कर चुका है। दावे किए गये हैं कि जे-36 एक छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान होगा। लेकिन दूसरी तरफ भारत में अभी पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान का प्रोजेक्ट भी कम से कम 10 साल दूर है। लिहाजा भारत दुविधा में फंसा हुआ है। इंडियन डिफेंस रिसर्च विंग यानि आईडीआरडब्ल्यू ने अपनी एक रिपोर्ट में भारतीय वायुसेना के एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से कहा है कि भारत की भी योजना छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण की है। अधिकारी ने नाम नहीं बताने की शर्त पर खुलासा किया है कि छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण की योजना भारत के रणनीतिक बदलाव को दर्शाता है। हालांकि एयरफोर्स के अधिकारी ने ये भी बताया कि इस तरह के एडवांस विमान बनाने की किसी भी योजना के लिए नए सिरे से डिजाइन की आवश्यकता होगी और फिलहाल भारत की क्षमताओं के हिसाब से एक बहुत बड़ी छलांग होगी। आपको बता दें कि भारत फिलहाल एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, जिसके तहत पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान बनाए जा रहे हैं। इसका डेवलपमेंट एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी कर रहा है।

आईडीआरडब्ल्यू की रिपोर्ट में भारतीय वायुसेना के अधिकारी ने सुझाव दिया है कि एएमसीए प्रोजेक्ट के तहत भारत का लक्ष्य साल 2028 तक पहले विमान का फ्लाइट टेस्ट करना है। और ये वक्त इंडियन एयरफोर्स और एएमसीए के लिए छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण के लिए कंसेप्ट बनाने के लिए बिल्कुल सही समय होगा। अधिकारी ने बताया है कि एक बार एएमसीए उड़ान भरना शुरू कर दे तो फिर इंडियन एयरफोर्स और आईडीआरडब्ल्यू छठी पीढ़ी के लड़ाकू जेट के डेवलपमेंट पर विचार-विमर्श शुरू कर सकता है। अधिकारी का मानना है कि पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण के बाद भारत के पास जो एक्सप्रिएंस होगा, वो अमूल्य होगा और ये ज्ञान छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के निर्माण में काफी काम आएंगे।

कौशल्या ह्यूमिनीटी फाउंडेशन द्वारा 'अभ्युदय' वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

अमृतपुर। समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान देने वाले कौशल्या ह्यूमिनीटी फाउंडेशन (खइ) द्वारा 'अभ्युदय' वार्षिकोत्सव का आयोजन डांडीपुर प्राथमिक विद्यालय में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विद्यालय परिवार और फाउंडेशन के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकगण महेन्द्र सिंह, दुर्गेश कुमार, संतोष दीक्षित, अंजली मैम, वंदना, अमिता पाल ने प्रमुख भूमिका निभाई। वहीं, केएचएफ के प्रदेश अध्यक्ष गनेश राजपूत, जिला अध्यक्ष जितेंद्र सिंह राजपूत, गौरव राजपूत, रक्षपाल, रामू राजपूत

सहित कांग्रेस के जिला महासचिव संदीप कुमार राजपूत भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों को शैक्षिक सामग्री जैसे स्लेट, कॉपियां, किताबें एवं मिष्ठान वितरित किया गया। अतिथियों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का संकल्प लिया।कार्यक्रम में वक्ताओं ने समाजसेवा, शिक्षा और जरूरतमंदों की सहायता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। केएचएफ के प्रदेश अध्यक्ष गनेश राजपूत ने कहा कि संगठन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और समाज कल्याण के लिए सतत कार्य करना है।कार्यक्रम का सफल आयोजन विद्यालय परिवार और केएचएफ के संयुक्त प्रयासों से हुआ। अतिथियों ने संस्था की इस पहल की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। कांग्रेस जिला महासचिव लोधी संदीप कुमार राजपूत को कौशल्या ह्यूमिनीटी फाउंडेशन का प्रदेश संयोजक बनाया गया जिसका लेटर जारी करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय लोधी अर्चना सिंगरौल जी ने संगठन को उत्तर प्रदेश में आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी दी। बताते चलें कि कौशल्या ह्यूमिनीटी फाउंडेशन एक सामाजिक संगठन है जो संपूर्ण भारत में गरीबों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों दलितों, शोषितों, मजदूरों के बच्चों को शिक्षा, प्रदान करने के शैक्षिक रिकार्ड सामग्री के साथ साथ त्यौहारों पर गरीबों के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों को करता है तथा बच्चों को खेल कूद, दौड़, लेखन व गायन प्रतियोगिताओं के माध्यम से समाज को जागरूक करता रहता है। संदीप कुमार राजपूत जिला महासचिव फर्रुखाबाद कांग्रेस ने आदरणीय राष्ट्रीय अध्यक्ष कौशल्या ह्यूमिनीटी फाउंडेशन का आभार व्यक्त किया और संगठन की ज़िम्मेदारी निभाने का संकल्प लिया।

जिलाधिकारी ने रसोइयों को किया सम्मानित

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

फर्रुखाबाद।जिलाधिकारी आशुतोष कुमार द्विवेदी द्वारा रखा बालिका इंटर कालेज फतेहगढ़ में मध्यान्ह भोजन योजनान्तर्गत आयोजित जनपद स्तरीय पाक कला प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया।इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने बाली उ0प्रा0 विद्यालय वीरपुर की रसोइया प्रेमवती, द्वितीय स्थान प्राप्त करने बाली प्रा0 विद्यालय ग्वालटोली की रसोइया

बेवी व तृतीय स्थान प्राप्त करने बाली उ0प्रा0 विद्यालय रंगसाजन की रसोइया पार्वती को पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किये। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि अच्छा खाना बनाना व प्यार से खिलाना एक कला है खाना बनाने बाली को माँ अन्नपूर्णा का स्वरूप माना जाता है, सरकार द्वारा आप लोगो को प्रोत्साहित करने के लिये इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है, आप लोग विद्यालय में खाने की गुडवत्ता का विशेष ख्याल रखे जिस तरह से अपने बच्चों के लिये खाना बनाती है उसी तरह स्कूल के बच्चों के लिये बनायें। इस अवसर पर बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक व संबंधित मौजूद रहे।

महिलाओं व ग्रामीणों ने आबादी से शराब ठेके हटाए जाने का उप जिलाधिकारी को दिया प्रार्थना पत्र

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

अमृतपुर। शराब के शौकीन इस अमृत पान के लिए कुछ भी करना पड़े करने के लिए तैयार रहते हैं। कहीं भी मिले और कैसे भी मिले यह उसके लिए हमेशा प्रयासरत रहते हैं। शराब पीने के बाद कुछ शौकीनों को ना तो शर्म लगती है और न हीं अपने या दूसरे के मान सम्मान से कोई सरोकार रहता है। शराब के बाद जो घटनाएं घटित होती हैं उनमें से अधिकतर मदिरापान के द्वारा ही होती है। झगड़ा फसाद हत्या आत्महत्या जैसे संगीत जुर्म भी शराब के नशे में किए जाते हैं। इसलिए प्रदेश सरकार ने आदेश जारी कर शराब के ठेकों को मुख्य मार्ग से एवं आबादी के क्षेत्र से दूर रखने के निर्देश जारी किए थे। परंतु अब यह आदेश सिर्फ कागजों में ही दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि अधिकतर शराब के ठेके आबादी के क्षेत्र में पहुंचकर अपनी अच्छी खासी जड़े जमा चुके हैं। ना तो इनका विरोध होता है और ना ही उनकी शिकायतें होती है। परंतु अमृतपुर थाना क्षेत्र के गांव रतनपुर निवासी ग्रामीण मूर्तिदेवी देवेश कमलेश सोनी रामपाल संजय ललित आदि लोंगों ने हिम्मत दिखाई और गांव में आबादी क्षेत्र में चल रहे इस शराब ठेके के विरुद्ध एक प्रार्थना पत्र उप जिलाधिकारी अमृतपुर को दिया। उस प्रार्थना पत्र में शराब ठेके का विरोध किया गया। ग्रामीणों ने एकजुट होकर मांग की कि इस शराब ठेके को आबादी क्षेत्र से कहीं दूर स्थापित किया जाए। क्योंकि अधिकतर शराब के पीने वाले लोग नशे में होकर यहां गाली गलौज करते हैं। मकान के सामने खड़े होकर नंगे हो जाते हैं और गलियों में ही खड़े होकर पेशाब करने लगते हैं। जिससे महिलाओं बच्चों जवान युवतियों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। जो की समाज के विरुद्ध है। ऐसे शराब के ठेके जो की आबादी में है गंगा पार क्षेत्र के ग्राम करनपुर दत्त कस्बा राजेपुर लीलापुर अमृतपुर व सलेमपुर में भी मौजूद हैं। इन ठेकों को जिला प्रशासन द्वारा आबादी के क्षेत्र से दूर हटाया जाए। क्योंकि इन शराब ठेकों से लोगों के दिलों दिमाग पर

बुरा असर पड़ता है। जबकि अमृतपुर का शराब ठेका तो ऐसी जगह पर है जहां पर आबादी भी घनी है और मुश्किल से 100 मीटर की दूरी पर चार विद्यालय भी मौजूद हैं। जिसमें जूनियर प्राइमरी कन्या विद्यालय एवं शिशु मंदिर आता है। इस विद्यालय का गेट और शराब ठेके का मुहाना आमने-सामने है। बच्चे जब स्कूल के गेट से बाहर निकलते हैं तो अक्सर शराब ठेके के सामने वाले फील्ड में शराबियों की धमा चौकड़ी होती है। गाली गलौज मारपीट और शराब के जाम छलकाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में प्रशासन की कार्रवाई उचित होगी या नहीं यह तो प्रशासनिक अधिकारी फैसला करेंगे और उनकी जिम्मेदारी होगी कि वह शराब के इन ठेकों को आबादी के क्षेत्र से हटाए जाने के निर्देश जारी करें। जिससे समाज में संदेश जाए और पीढ़ियां सही पथ पर आगे बढ़ सके।

होली मिलन समारोह में उमड़ा जन सैलाव,दलीय सीमाएं टूटी

न्यूज़ लाइन नेटवर्क

शमशाबाद ,फर्रुखाबाद। शमसाबाद तृतीय से जिला पंचायत सदस्य के संभावित प्रत्याशी विश्व प्रकाश चतुर्वेदी एडवोकेट के होली मिलन समारोह में जन सैलाव उमड़ पड़ा, होली मिलन समारोह में दलीय ब जातीय सीमायें टूट गई,कार्यक्रम में देहाती लोक गीत गायकों ने समां बांध दिया,तो वहीं कार्यक्रम में पधारे दो सैकड़ा से अधिक लोगों ब आधा सैकड़ा से अधिक ग्राम प्रधानों ने कार्यक्रम की जम कर सराहना की,कार्यक्रम में भाजपा नेता ब शमसाबाद के पूर्व चेयरमैन विजय गुप्ता, राष्ट्रीय लोक दल के प्रदेश महासचिव राजीव रंजन,भाकियू लोक शक्ति के प्रदेश उपाध्यक्ष अजीत पटेल,अपना दल एस युवा मंच के राष्ट्रीय सचिव सुरजीत सिंह कटियार,जिला पंचायत सदस्य कुंवर जीत सिंह जीतू भैया,सुबोध गंगवार, ललित भाई पटेल,राष्ट्रीय लोक दल जिलाध्यक्ष सूरज चौहान,कुआं खेड़ा वजीर आलम के प्रधान हरिदत्त शाक्य,प्रधान संघ के अध्यक्ष उमेश चतुर्वेदी,शमशाबाद प्रथम से जिला पंचायत सदस्य पद के प्रत्याशी विमल यादव,शमशाबाद द्वितीय से जिला पंचायत सदस्य पद के प्रत्याशी राजपाल यादव,संजय पाठक,संजय गंगवार,संजय राजपूत,कटिया प्रधान रामासरे,ललौर प्रधान रविंद्र सिंह, रोशनाबाद प्रधान स्वदेश गंगवार,राजेश गंगवार,अद्दूपुर प्रधान पंकज यादव, सन्तकुइंयां प्रधान इस्लाम अहमद,गदनपुर चैन प्रधान सतीश कठेरिया,अतुल दुबे,आलोक यादव,पत्रकार विपिन सिंह चौहान,वरिष्ठ पत्रकार राजीव चतुर्वेदी,फैजान अंसारी, दीपू दीक्षित,पंकज मिश्रा,आलोक शुक्ल सोनू,अनुभव मिश्रा,विवेक चतुर्वेदी,विशाल शर्मा,नवनीत सैनी,दीपक श्रीवास्तव,सरवर अंसारी,अनिल अवस्थी, आसिफ राजा,अमित सक्सेना,सुनील राजपूत,अटल चतुर्वेदी,अनूप अग्निहोत्री,सहित सैकड़ों की संख्या में लोक मौजूद रहे।

सभी उप निरीक्षक पेंडिंग विवेचना जल्द से जल्द खत्म करें दीपक सिंह रघुवंशी कोतवाल टांडा

सभी पुलिसकर्मी लापरवाही कतई नहीं करेंगे पेंडिंग विवेचना उप निरीक्षक जल्द से जल्द खत्म करें लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे कोतवाल टांडा दीपक सिंह रघुवंशी

न्यूज लाईन नेटवर्क अम्बेडकरनगर

अंबेडकरनगर।पुलिस अधीक्षक अम्बेडकरनगर केशव कुमार अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी विशाल पाण्डेय सीओ टांडा शुभम कुमार के निर्देश पर शनिवार को कोतवाली टांडा परिसर में देर रात कोतवाल टांडा दीपक सिंह रघुवंशी ने उप निरीक्षक विवेचकों की बैठक की बैठक के दौरान कोतवाल टांडा दीपक सिंह रघुवंशी ने विवेचक उप निरीक्षक को कड़ा निर्देश दिया कि आप लोग पेंडिंग विवेचना जल्दी खत्म करें लापरवाही कतई ना करें आप लोग खासकर ध्यान दें कि त्योहार सब करीब है अलविदा जुमे की नमाज है रमजान मुबारक महीना चल रहा है ईद भी करीब है सभी उप निरीक्षक चौकी प्रभारी भ्रमण पैदल गश्त करते रहेंगे अपने क्षेत्र में लापरवाही नहीं करेंगे टांडा कोतवाल दीपक सिंह रघुवंशी ने कहा लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी हालांकि काफी नाराज दिखे

बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि आप लोग लापरवाही क्यों करते हो कृपया ऐसा ना करें वरना होगी कार्रवाई आप लोग सभी चौकी प्रभारी उप निरीक्षक ड्यूटी पॉइंट पर कटाई लापरवाही नहीं करेंगे इस दौरान अपराध निरीक्षक अनिरुद्ध प्रताप सिंह चौकी प्रभारी सक्रवाल राम प्रकाश सिंह उपनिरीक्षक जयप्रकाश यादव उप निरीक्षक अरुण कुमार उप निरीक्षक दिनेश राय उपनिरीक्षक राकेश कुमार खरवार उप निरीक्षक राम उपग्रह उप निरीक्षक प्रकाश कुमार उप निरीक्षक आशीष शुक्ला उप निरीक्षक अजय कुमार चौकी प्रभारी मुबारकपुर मुंशी आशीष सिंह दीवान पुलिसकर्मी मौजूद थे।

केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग से लाखों का नुकसान

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

जहानगंज। जिले के थाना जहानगंज क्षेत्र के कोरी खेड़ा में स्थित अग्रवाल इंटरप्राइजेज नामक केमिकल फैक्ट्री में सोमवार को अचानक भीषण आग लग गई। प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट को आग लगने का कारण माना जा रहा है। आग इतनी तेज़ी से फैली कि फैक्ट्री में रखा सारा सामान जलकर खाक हो गया, जिससे करीब 20 लाख रुपये का नुकसान होने का अनुमान है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग लगते ही फैक्ट्री से तेज़ धुआं उठने लगा और चंद मिनटों में ही लपटों ने पूरे परिसर को घेर लिया। फैक्ट्री में खेती से जुड़ी कीटनाशक दवाओं का निर्माण किया जाता था, जिनमें मौजूद रसायन अत्यधिक ज्वलनशील होते हैं। इसी वजह से आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। फैक्ट्री में आग लगने की खबर मिलते ही स्थानीय लोगों में हड़कंप मच गया। तुरंत पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। दमकल कर्मचारियों को आग

पर काबू पाने में भारी मशक्कत करनी पड़ी, लेकिन कड़ी मशक्कत के बाद आग पर नियंत्रण पा लिया गया। गनीमत रही कि हादसे के वक्त फैक्ट्री में कोई कर्मचारी मौजूद नहीं था। जिससे किसी तरह की जनहानि नहीं हुई। पुलिस और फायर ब्रिगेड के अधिकारी घटनास्थल पर मौजूद हैं और आग लगने के वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है। फिलहाल, फैक्ट्री मालिक से संपर्क कर नुकसान का आकलन किया जा रहा है। प्रशासन द्वारा प्रभावित क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने और भविष्य में ऐसे हादसों से बचने के लिए जरूरी कदम उठाने की बात कही गई है।

गांव में दबंगों का उत्पात, परिवार पर हमला - पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

अमृतपुर। थाना अमृतपुर क्षेत्र के ग्राम बालीपट्टी रानीगांव में दबंगों ने एक परिवार पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया, जिसमें कई लोग घायल हो गए। पीड़ित परिवार ने 112 नंबर पर कॉल कर पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और कार्रवाई शुरू की। ग्राम बालीपट्टी रानीगांव निवासी सुनील दत्त पुत्र बृजनंदन लाल ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि 22 मार्च 2025 को दोपहर करीब 2:00 बजे वह अपने पूर्व में खरीदे गए मकान के बाहर सफाई कर रहे थे, तभी गांव के ही श्याम बिहारी पुत्र कन्हैयालाल, सर्वेश, दयानंद पुत्र स्वर्गीय बृजबिहारी, अभिषेक पुत्र सर्वेश, मदन मोहन पुत्र अवध बिहारी, आकाश, आदर्श पुत्र मदन मोहन निवासी बालीपट्टी रानीगांव एवं नारायण स्वरूप पुत्र रामकिशोर निवासी करनपुर दत्त अपने पांच अज्ञात साथियों के साथ वहां पहुंचे और गाली-गलौज करते हुए सफाई करने से रोकने लगे। जब सुनील दत्त ने विरोध किया तो दबंगों ने लाठी-डंडों से हमला कर दिया। शोर-शराबा सुनकर उनके पुत्र कृष्ण कुमार, शिव कुमार, प्रेम कुमार और पत्नी रमाकांत की पुत्रवधू राधा मौके पर पहुंचे तो हमलावरों ने उन पर भी हमला कर दिया। इस दौरान कृष्ण कुमार का मोबाइल टूट गया और सभी को गंभीर चोटें आईं। घटना की सूचना पर 112 पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा। थाना अमृतपुर पुलिस ने घायलों का मेडिकल परीक्षण कराते हुए तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। अमृतपुर थाना अध्यक्ष ने बताया कि मामले में विधिक कार्रवाई जारी है और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। वहीं, पीड़ित परिवार ने दबंगों से जान का खतरा बताते हुए पुलिस से सुरक्षा की मांग की है।घटना के बाद गांव में तनाव की स्थिति बनी हुई है। ग्रामीणों ने पुलिस प्रशासन से दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई की मांग की है ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

नेहरू युवा केंद्र के तत्वाधान से मनाया गया शहीद दिवस

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

राजेपुर निविया पंचायत घर मे शहीद दिवस के उपलक्ष मे नेहरू युवा केन्द्र के तत्वाधान से कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे ग्राम प्रधान डॉ नेमचंद्र की अध्यक्षता मे देश के तीन वीर सपूतो के सम्मान मे हर साल की भांति इस वर्ष भी नेहरू युवा केंद्र के स्वयं सेवक लक्ष्मी नारायण पाण्डेय द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन कराया। हमारे देश में 23 मार्च को शहीद दिवस मनाया जाता है, भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह लाखों क्रांतिकारियों के बलिदान त्याग और साहस की अमर गाथा भी है, इन्हीं वीरों में से अमर शहीद थे भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु। इन तीनों ने देश की आज़ादी के लिये हंसते-हंसते अपने प्राण त्याग दिए । आजादी की लड़ाई में 23 मार्च 1931 को ब्रिटिश हुकूमत ने भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी लेकिन इनका बलिदान स्वतंत्रता आंदोलन को और भी तेज कर गया देश के किन्हीं तीन वीर सपूतों के सम्मान में हर साल 23 मार्च को शहीद दिवस मनाया जाता है । और लक्ष्मी नारायण पाण्डेय ने शहीद दिवस का महत्व भी बताया कि भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु की शहादत ने पूरे देश की स्वतंत्रता की लहर को और भी तेज कर दिया था तब से 23 मार्च को शहीद दिवस मनाया जाता है और इस दिन उनके बलिदान को याद किया जाता है 23 मार्च का दिन हमें याद दिलाता है कि आजादी कितने बलिदानों से मिली है इस कार्यक्रम का आयोजन नेहरू युवा केंद्र फर्रुखाबाद द्वारा जिला युवा अधिकारी सुश्री सोनिका चंद्रा जी द्वारा किया गया उनके मार्गदर्शन से यह संदेश गांव में उसे छूटे हुए युवाओं तक पहुंचना है जहां तक कोई ना जाता हूं और इस संदेश के साथ ही आओ झुक कर सलाम करें उन शहीदों को जिनकी हिम्मत से वतन आबाद है वह मिट गए तो नाम रोशन हुआ उनके होने से ही यह देश आजाद है जो शहीद हुए हैं उनका अरमान जिंदा है जब तक रहेगा भारत उनका नाम जिंदा है वह फांसी पर छोड़ गए ताकि हम सर उठाकर जी सकें उनका बलिदान व्यर्थ न जाने दें यह मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी।

चर्चा में आई बेटी को समाजवादी पार्टी ने दी आर्थिक सहायता, न्याय और संघर्ष का दिया भरोसा

अम्बेडकरनगर। अंबेडकर नगर जनपद में हाल ही में चर्चा में आई उस साहसी बिटिया, जो किताब लेकर अन्याय के खिलाफ भागते हुए शिक्षा की अलख जगा रही थी, जिसको उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अपने एक्स हैंडल से ट्वीट किया था उसके परिवार से आज समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने मुलाकात की। समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष श्री जंग बहादुर यादव ने पार्टी की ओर से बिटिया के आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए ?50,000 की आर्थिक सहायता प्रदान की। इस अवसर पर उन्होंने कहा, 'प्रशासन को यह याद रखना होगा कि समाजवादी पार्टी गरीब, मजलूम, और पीड़ितों के साथ खड़ी है। हर अन्याय के खिलाफ हम पूरी ताकत से लड़ेंगे और अंबेडकर नगर के आम लोगों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा।' इस दौरान एक डेलीगेशन भी उनके साथ मौजूद रहा, जिसमें समाजवादी पार्टी के नेता मुख्य रूप से मिलने पहुंचे

मोहम्मद एबाद पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव यूथ ब्रिगेड
मोहम्मद सईम युवजन सभा प्रदेश उपाध्यक्ष
श्री सिकंदर यादव – प्रदेश अध्यक्ष, समाजवादी अधिवक्ता सभा
श्री हैदर अब्बास – राष्ट्रीय महासचिव, समाजवादी अधिवक्ता सभा
श्री सुभाष राय – पूर्व विधायक, जलालपुर
श्री अजीत यादव – वरिष्ठ अधिवक्ता
डॉ. राजेश सिंह एवं डॉ. अभिषेक सिंह – समाजसेवी
संदीप वर्मा जी – सपा नेता
सीमा यादव जी – जिला अध्यक्ष, महिला सभा अंबेडकर नगर
अखिलेश यादव जी – विधानसभा अध्यक्ष, जलालपुर
श्याम नारायण यादव जी – वरिष्ठ सपा नेता
अजय दुबे अंजू जी – जिला उपाध्यक्ष, समाजवादी पार्टी
विपिन बिहारी यादव जी – जिला अध्यक्ष, अधिवक्ता सभा
इश्तियाक अहमद जी – वरिष्ठ अधिवक्ता
सभी नेताओं ने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर न सिर्फ कानूनी सहायता का भरोसा दिलाया, बल्कि हर संभव आर्थिक, सामाजिक और मानसिक समर्थन देने का आश्वासन दिया।

नगर पालिका की बोर्ड बैठक में 136 करोड़ का बजट पास

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

फर्रुखाबाद। नगर पालिका परिषद बोर्ड बैठक पालिका अध्यक्ष वत्सला अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई संपन्न ।नगर पालिका परिषद बोर्ड की बैठक सभागार में संपन्न हुई बैठक में 37 सभासद आए और पांच सभासद अनुपस्थित रहे। जिसमें वित्तीय वर्ष 2025 व 26 के लिए 136 करोड रुपए का बजट सर्वसम्मति स्वीकृत किया गया।

इसमें 86 करोड़ 53 लाख रुपए कर्मचारियों के वेतन ,पेंशन व अन्य कार्यों में खर्च होंगे जबकि विकास कार्य में प्रकाश व पेयजल व्यवस्था पर 49 करोड़ 50 लाख रुपए खर्च होंगे।कर्मचारियों के वेतन, पेंशन व अन्य कार्यों में खर्च होंगे 86.53 करोड रुपए ,विकास कार्यों के लिए 49.50 करोड रुपए, स्वीकृत हुए प्रमुख प्रस्ताव डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन वार्डवार चालू होगा,वार्डों से कूड़ा, हाथ गाड़ी, ई रिक्शा ,ओपन डस्टबिन कंटेनर आदि से सीधे कंपैक्टर में पहुंचेगा,कूड़ा जमीन पर डाले बिना अमीलपुर स्थित एमआरएफ सेंटर जाएगा, सफाई व्यवस्था के लिए इसवीपिंग ,सेक्शनमशीन आदि खरीद के प्रस्ताव,पटेल पार्क लाइब्रेरी का सुंदरीकरण होगा, फतेहगढ़ चौराहे से पुलिस लाइन तक डेकोरेटिव एलइडी बेचें व टहलने हेतु व्यवस्था,फतेहगढ़ गुरुद्वारा से चौराहे ग्रीन बेल्ट के साथ टहलने हेतु व्यवस्था,भोलेपुर ओवर ब्रिज पर दोनों तरफ फुटपाथ व पुल के नीचे वेंडिंग जोन व पब्लिक टॉयलेट बनेगा,ओवरब्रिज पर दोनों तरफ पोल लाइट लखनऊ आदि शहरों की भांति लगेंगे,फाउंटेन चौराहे का लखनऊ की तर्ज पर सुंदरीकरण करवाया जाएगा,शहर में तीन तिराहों व चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल लाइट्स लगेगी,उत्सवों व वैवाहिक कार्यक्रमों में तापमान नियंत्रक प्रणाली युक्त वॉटर टैंकर उपलब्ध कराए जाएंगे।

संकिसा में विदेशी बौद्ध पर्यटक की तबीयत बिगड़ने से मौत

न्यूज़ लाईन नेटवर्क

संकिसा। बौद्ध धर्म के पवित्र स्थलों के भ्रमण पर आए म्यांमार के एक वरिष्ठ पर्यटक की संकिसा में तबीयत बिगड़ने के बाद मौत हो गई। मृतक की पहचान न्यू न्यू आए (65 वर्ष) के रूप में हुई है, जो एक रिटायर्ड प्रोफेसर थे। चिकित्सकों के अनुसार, उनकी मृत्यु डायरिया के कारण हुई। जानकारी के अनुसार, म्यांमार से 6 मार्च को 81 सदस्यीय बौद्ध पर्यटक दल भारत आया था। यह दल बौद्ध धर्म से जुड़े विभिन्न तीर्थ स्थलों के दर्शन कर रहा था। इसी क्रम में 22 मार्च को 81 में से 18 पर्यटक एमटीएम टूर एंड ट्रेवल्स की मैनेजर के साथ संकिसा पहुंचे। दल में शामिल न्यू न्यू आए की अचानक तबीयत बिगड़ने लगी और उन्हें लगातार उल्टियां होने लगीं। संकिसा में ही प्राथमिक उपचार दिलाया गया, लेकिन उनकी हालत और गंभीर होती गई। स्थिति बिगड़ते देख स्थानीय व्यक्ति प्रभु दयाल ने निजी वाहन से उन्हें जिला अस्पताल लोहिया पहुंचाया, जहां इमरजेंसी में डॉ. वैभव यादव ने परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। डॉक्टर ने बताया कि साथ आए यात्रियों के अनुसार, पर्यटक डायरिया से पीड़ित थीं, जिससे उनकी हालत लगातार बिगड़ती चली गई। मृतक पर्यटक के साथ यात्रा कर रही उषा जेंग मोग ने बताया कि जब वे भारत आई थीं, तभी उनकी तबीयत ठीक नहीं थी और उन्हें उल्टी-दस्त हो रहे थे। मृतक की बड़ी बहन भी यात्रा दल के साथ मौजूद थीं, जो इस घटना से बेहद दुखी हैं। घटना की जानकारी मिलते ही प्रशासन सतर्क हो गया है। विदेशी पर्यटक की अचानक मौत को लेकर आवश्यक जांच की जा रही है और उच्च अधिकारियों को इसकी सूचना भेजी गई है। संकिसा बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है, जहां हर साल देश-विदेश से हजारों बौद्ध श्रद्धालु आते हैं। इस घटना के बाद प्रशासन ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि भविष्य में पर्यटकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें ताकि इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके।

सहायक प्राध्यापक के साथ मारपीट का मामला पकड़ा जोर, गुस्से में प्रोफेसर

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सिंगरौली/ मध्य प्रदेश। जिला मुख्यालय बैढ़न के प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस में बीते दिन शुक्रवार की शाम एक सहायक प्राध्यापक के साथ एक छात्र संगठन के सदस्यों ने मारपीट का मामला तूल पकड़ लिया है। महाविद्यालय के प्राचार्य की ढुलमुल रवैया एवं अभाविप छात्र संगठन के गुंडागर्दी से त्रस्त प्राध्यापको ने पठन-पाठन ठप कर काली पट्टी बांधते हुए विरोध प्रदर्शन करते हुए पैदल मार्च कर एसपी दफ्तर पहुंचे। बताया जा रहा है कि सीएसपी ने उनको उनके बातों को सुना, लेकिन मामला सुलझा नही पाए है। वही आरोप है कि पुलिस सहायक प्राध्यापको पर मामले में समझौता कराने के लिए दबाव बना रही है। दरअसल हुआ यू था की प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस बैढ़न में बीते दिन कल शाम करीब 5:30 बजे सहायक प्राध्यापक नितेश कुमार सिंह के साथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारी अरुणेंद्र पाण्डेय एवं निखिल वर्मा प्राचार्य के कक्ष में मारपीट करने लगे बस आरोप इतना था कि सहायक प्राध्यापक ने एक छात्र को ड्रेस कोड न होने पर बाहर कर दिया था। इसी से उक्त छात्र संगठन के पदाधिकारी नाराज होकर प्राचार्य के कक्ष में जाकर मारपीट किए हैं। इस तरह का आरोप महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक नितेश कुमार सिंह ने एसपी के यहां दिए गए आवेदन पत्र में आरोप लगाया है। उक्त घटना के बाद कोतवाली बैढ़न में लिखित रिपोर्ट दी गई। वही इस

घटना से सहायक प्राध्यापक डरे सहमे नजर आए और आज उक्त महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं उक्त स्टाफ पठन-पाठन के कामकाज को छोड़कर हाथ में काली पट्टी बांध परिसर में एकत्रित होते हुए कॉलेज प्रबंधन एवं प्राचार्य के खिलाफ जमकर नारेबाजी करने लगे। दोपहर के वक्त एसपी दफ्तर से प्राध्यापकों को बुलावा आया। जहां महाविद्यालय के प्राध्यापक पैदल मार्च एवं नारेबाजी करते हुए एसपी दफ्तर पहुंचे। इस दौरान सीएसपी ने उनकी बातों को सुना, लेकिन किसी ठोस नतीजे पर नही पहुंचे। लेकिन सूत्र बता रहे हैं कि पुलिस समझौता करने के पक्ष में है। शायद इसीलिए घटना के 24 घंटे बाद भी मारपीट करने वाले छात्र संगठन के पदाधिकारी पर अपराध पंजीबद्ध नही किया जा सका है। उधर अखिल विद्यार्थी परिषद के जिला संयोजक निखिल वर्मा ने एसपी के यहा आवेदन पत्र देते हुए आरोप लगाया है कि उक्त महाविद्यालय में अनुशासनहीनता की गतिविधियां हो रही है। बीते दिन कल 21 मार्च महाविद्यालय परिषर में एक विद्यार्थी को ड्रेस कोड में न होने के कारण अनुशासन समिति के सदस्य प्रो.नितेश सिंह ने परिषद से बाहर कर दिया था। इसका विरोध करने पर गाली-गलौंज करते हुए जाति सूचक शब्दों का इस्तेमाल किया है। बहरहाल जिला मुख्यालय बैढ़न स्थित उक्त महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के साथ की गई मारपीट का मामला जोर पकड़ लिया है। महाविद्यालय के प्राचार्य के अलावा अधिकांश प्राध्यापक आर-पार करने के मूड़ में है। वही प्राचार्य के खिलाफ भी मोर्चा खोल दिया है। आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे प्राध्यापकः- महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक नितेश सिंह सहित अन्य कई प्राध्यापकों ने कहा कि महाविद्यालय में मारपीट की घटना पहली बार नही है। इसके पूर्व भी दो-तीन बार ऐसी घटनाएं घटित हो चुकी हैं। आरोप है कि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम यू सिद्धीकी हमेशा मामले को दबाने में लगे रहते थे। बीते दिन कल शुक्रवार को उन्ही के चेंबर में उन्ही के समक्ष छात्र संगठन के पदाधिकारियों ने मारपीट की और वह मामले को रफा-दफा करने के लिए दबाव दे रहे थे। प्राध्यापकों ने यहां तक आरोप लगाया है कि प्राचार्य कई वर्षों से इसी महाविद्यालय में पदस्थ रहे। बीच में कुछ महीनों के लिए स्थानांतरण हुआ था। बैढ़न से उनका मोहभंग नही हो रहा है। इसलिए महाविद्यालय गुटबाजी चरम पर है और इसके पूरे घटना क्रम के किरदार प्राचार्य हैं। आगे कहां की यह लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक न्याय नही मिल जाता हैं। प्राध्यापकों ने सौंपा ज्ञापनः-महाविद्यालय में मारपीट की घटना को लेकर मामला काफी गरमाया हुआ है। सहायक प्राध्यापक के पक्ष में सड़क पर उतरे अन्य प्राध्यापको ने मारपीट करने वाले आरोपियों के विरुद्ध शासकीय कार्य में बांधा डालने समेत अन्य धाराओं के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किए जाने की मांग को लेकर एसपी दफ्तर पहुंचे। जहां एसपी को ज्ञापन सौंपते हुए प्राध्यापको ने कहा कि उक्त छात्र संगठन के कुछ सदस्य एससी-एसटी एक्ट लगवाने एवं जान से मारने की धमकी भी दे रहे हैं। यह अभी आरोप लग रहा है कि जिस वक्त भारी संख्या में छात्र संगठन के लोग पहुंचे थे। ऐसे में प्राचार्य ने सहायक प्राध्यापक को चेंबर में क्यों बुलाया। एसपी ने कहा कि इस संबंध में एसडीएम के माध्यम से प्राचार्य को भी नोटिस जारी कर जवाब तलब किया जाएगा। आखिरकार पुलिस क्यों कराना चाहती है समझौताः- महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने बताया कि बैढ़न के पुलिस अधिकारी मामले को समझौता करने में लगे हैं। पुलिस सेवकों ने समझौता करने में इतनी रूचि क्यों ली जा रही है। यह बात समझ से परे है प्राध्यापकों ने यहा तक कहां की उक्त संगठन के बारे में सब जानते हैं शायद इसीलिए अभी तक आरोपियों के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध नही किया गया। शायद सत्ताधारी नेताओं का दबाव होगा और नौकरी सबको प्यारी है। जिला एवं थाना बड़े मुश्किल से मिल रहा है। यह बात अब किसी से छुपी नही है संभवतः इसीलिए पुलिस भी इतना रुचि नही ले रही है। सहायक प्राध्यापक के साथ मारपीट हुई और बेइज्जती कर डराया-धमकाया गया। इससे पुलिस का कोई लेना-देना नजर नही आ रहा है। अपनी कुर्सी सलामत रहे इसके लिए पुलिस कबायत कर रही है।

पूर्व क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक विनोद चौधरी का किया गया स्वागत

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश। बीजपुर एनटीपीसी, रिहंदनगर में पूर्व क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक विनोद चौधरी का निजी कार्यक्रम के तहत आगमन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला समरसता प्रमुख अनिल त्रिपाठी एवं कुटुम्ब प्रबोधन के जिला संयोजक अनन्त मोहन ने स्वागत एवं अभिनन्दन किया। अनिल त्रिपाठी ने बताया कि विनोद चौधरी अपने कार्यकाल के दौरान संघ से जुड़े रहे। उन्होंने संघ के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेते हुए भारतीय संस्कृति और राष्ट्र को सर्वोपरि माना। विनोद चौधरी मालवीय मिशन के विस्तार में भी अपना विशेष योगदान दिया था। कुटुम्ब प्रबोधन के जिला संयोजक अनन्त मोहन ने बताया कि चौधरी सादा 'जीवन उच्च विचार' के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने एनटीपीसी में विभिन्न पदों पर रहते हुए पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ कार्य किया था। आज भी ऊर्जा के विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

एनटीपीसी विंध्याचल को जल संरक्षण में उत्कृष्टता के लिए 2024 के सीबीआईपी पुरस्कार से किया गया सम्?मानित

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सिंगरौली/ मध्य प्रदेश। सतत जल प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए, एनटीपीसी विंध्याचल को 2024 के केंद्रीय सिंचाई और शक्ति बोर्ड (ंँइ) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 'जल पुनः उपयोग परियोजना - जल आपूर्ति/स्वच्छता/ठोस अपशिष्ट प्रबंधन' के तहत उनकी ज़ीरो लिक्विड डिस्चार्ज (ींव) और वर्षा जल संचयन प्रणाली परियोजना के लिए प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 21 मार्च, 2025 को नई दिल्ली स्थित एससीओपीई परिसर में प्रस्तुत किया गया, जिसमें स्टेशन की जल संरक्षण के क्षेत्र में अभिनव पहलों को मान्यता दी गई। इस अवसर पर श्री संजय प्रकाश यादव, अपर महाप्रबन्धक (ईएमजी) और राहुल वर्मा, अपर महाप्रबंधक (एयूडी) ने एनटीपीसी विंध्याचल की ओर से यह पुरस्कार प्राप्त किया। एनटीपीसी विंध्याचल की ज़ीरो लिक्विड डिस्चार्ज (ींव) पहल के माध्यम से, यह सुनिश्चित किया जाता है कि अपशिष्ट जल को उपचारित कर पुनः उपयोग किया जाए, जिससे पर्यावरण में किसी भी प्रकार का जल निर्वहन नहीं होता। इसके अतिरिक्त, स्टेशन की वर्षा जल संचयन प्रणाली भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देती है, जिससे जल स्थिरता को प्रोत्साहन मिलता है। ये पहलें एनटीपीसी विंध्याचल की पर्यावरणीय जिम्मेदारी और संसाधन अनुकूलन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती हैं और विद्युत क्षेत्र में जल संरक्षण के लिए नए मानक स्थापित करती हैं।

एसपी ऑफिस में पहुंची भाजपा झंडे वाली स्कॉर्पियो, एसपी के निर्देश पर ब्लैक फिल्म उतारी, वाहन मालिक पर जुर्माना

न्यूजलाइन नेटवर्क - चितरंगी संवाददाता - आदर्श तिवारी
चितरंगी/सिंगरौली। सिंगरौली जिले के एसपी ऑफिस में एक भाजपा झंडे वाली स्कॉर्पियो पर पुलिस ने कार्रवाई की। घटना शाम करीब 5:00 बजे की है, जब रंजीत नाम का व्यक्ति अपनी स्कॉर्पियो में तीन अन्य युवकों के साथ एसपी ऑफिस पहुंचा। इस दौरान एसपी ने गाड़ी पर लगी ब्लैक फिल्म देखी, जो वाहन के कांच पर लगी हुई थी। एसपी ने तुरंत यातायात प्रभारी दीपेंद्र सिंह को कार्रवाई के निर्देश दिए।

इसके बाद यातायात पुलिस के स्टाफ ने मौके पर पहुंचकर गाड़ी से ब्लैक फिल्म को उतारा। साथ ही, गाड़ी के मालिक रंजीत पर 500 रुपये का जुर्माना भी लगाया गया।ब्लैक फिल्म का उपयोग सड़क सुरक्षा के लिए प्रतिबंधित है, क्योंकि यह वाहन की दृश्यता को कम करता है और दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ा सकता है। इस कार्रवाई से यह संदेश भी दिया गया है कि बिना नियमों का पालन किए किसी को भी छूट नहीं दी जाएगी, चाहे वह किसी पार्टी से संबंधित क्यों न हो।इस घटना ने एसपी ऑफिस के समक्ष सड़क सुरक्षा के प्रति कड़ी प्रतिबद्धता और नियमों के पालन की महत्ता को उजागर किया।

जिले में बे मौसम बारिश व ओलावृष्टि तथा तूफान से रवि व दलहनी तिलहनी फसलों को हुआ भारी क्षति

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सिंगरौली/ मध्य प्रदेश।बीते दिन शुक्रवार की शाम जिले के चितरंगी-सरई-दुधमनिया तथा बैढ़न इलाके में तेज तूफान बारिश के साथ भारी मात्रा में ओले गिरे हैं। इस ओलावृष्टि वह बारिश से रवी फसल गेहूं, तिलहनी, दलहनी फसलो तथा आम एवं महुआ के फूल को भारी क्षति होने का अनुमान जताया है। जबकि राजस्व विभाग के अनुसार ओलावृष्टि एवं बारिश से 5 से 15 प्रतिशत फसलों को नुकसान हुआ है। गौरतलब है कि जिले में बीते दिन कल शुक्रवार को मौसम ने अपना असली रूप दिखाते हुए किसानों पर आफत डाल दिया है। शुक्रवार के शाम के वक्त जिले के तहसील सरई अंतर्गत शिवगढ़ दुधमनिया, घोघरा इटमा एवं दुधमनिया तहसील के खोखवा बगैया दुधमनिया सहित आसपास के गांव व चितरंगी तहसील क्षेत्र के करौंदिया खम्हरिया,कोल्डीहा, कुलकवार, लेदपुरवा, हरमा समेत कई गांव में भारी बारिश वह ओलावृष्टि हुई है। जहां रवी फसल गेहूं, दलहनी में अरहर मसूर, मटर, चना व तिलहनी में सरसो के साथ-साथ आम एवं महुआ के फूलों को भारी नुकसान होने का अनुमान बताया गया है। क्षेत्र में ओलावृष्टि तथा बारिश होने से किसानों में हाय तौबा मच गई है।। शनिवार को उक्त तहसील क्षेत्र के तहसीलदारों ने ओलावृष्टि तूफान एवं बारिश से प्रभावित गांव का सर्वे करने के लिए अलग-अलग टीम गठित किया है टीम में राजस्व के हल्का पटवारी, कृषि एवं पंचायत विभाग का संयुक्त टीम बनाकर रवाना किया जहां सर्वे कार्य शुरू है राजस्व अधिकारियों के अनुसार प्राथमिक तौर पर नजरी नक्शा के अनुसार 5 से 15 प्रतिशत ही फसलों को नुकसान पहुंचा है। वही सर्वे कार्य जारी है। इस संबंध में चितरंगी तहसीलदार ऋषि नारायण सिंह, दुधमनिया तहसीलदार दीप नारायण सिंह तिवारी एवं सरई तहसीलदार चंद्रशेखर मिश्र ने बताया कि ओलावृष्टि एवं तूफान से मुख्यालय के समिति करीब आधा दर्जन से अधिक गांव प्रभावित हैं 5 से 10 प्रतिशत फसलों को नुकसान हुआ है।

पीएम श्री जनपद सोनभद्र की जनपद स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश। शनिवार को पीएम श्री विद्यालयों की क्रीडा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता मुख्य अतिथि मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी विशिष्ट अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री मुकुल आनंद पाण्डेय, जनपद सोनभद्र के सभी विकासखण्डों के खंड शिक्षा अधिकारी एवं जिला समन्वयक सामुदायिक शिक्षा/ प्रशिक्षण जय किशोर वर्मा एवं जनपद सोनभद्र के सम्मानित व्यायाम शिक्षक सभी पीएम श्री विद्यालयों के सम्मानित प्रधानाध्यापक एवं सहायक अध्यापक तथा खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम से जुड़ाव रखने वाले शिक्षक एवं बच्चों की उपस्थिति में छात्र-छात्राओं के कौशल को प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर दिया गया। सभी उपस्थित लोगों एवं बच्चों ने एक स्वर में शासन एवं सरकार द्वारा सुंदर पहल की सराहना की गई। सर्वप्रथम मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया स्वागत गीत एवं सरस्वती वंदना पीएम श्री विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सोनभद्र मुकुल आनंद पाण्डेय, खंड शिक्षा अधिकारी अरविंद कुमार पटेल तथा विनोद कुमार एस. आर. जी. सोनभद्र द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिता को स कुशल संपन्न कराने की सभी छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को शपथ दिलाई गई। पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय घोरावल सोनभद्र के छात्र द्वारा मशाल लेकर क्रीड़ा प्रतियोगिता का आगाज कराया गया, फिर पटाखे एवं गुब्बारे आसमान में उड़ाए गए तथा आतिशबाजी की गई। खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सोनभद्र, खंड शिक्षा अधिकारी विकास खंड चतरा एवं विनोद कुमार एस आर जी जनपद सोनभद्र द्वारा किया गया। जनपद स्तरीय खेल प्रतियोगिता में कबड्डी, रेस, लंबी

कूद, शाटपुट, लोकगीत एवं लोक नृत्य, पोस्टर प्रतियोगिता एवं बाधा दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खेल का शुभारंभ 100 मीटर की रेस से किया गया 100 मीटर की रेस में पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय घोरावल से अंशु यादव द्वितीय स्थान, पोस्टर प्रतियोगिता में पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय घोरावल से बालिका वर्ग में इच्छा अग्रहरि प्रथम स्थान, बालक वर्ग में रवि किशन प्रथम स्थान बाधा दौड़ में पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय घोरावल सोनभद्र के छात्रों द्वारा अच्छा प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान एवं संस्कृति कार्यक्रम में बालिकाओं द्वारा तृतीय स्थान प्राप्त किया गया। जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय घोरावल से विनोद कुमार प्रधानाध्यापक, श्वेता ठाकुर, अलका साहू, वंदना यादव सहायक अध्यापिका, रंजू कुशवाहा अनुदेशक तथा विजय शंकर शिक्षा मित्र छात्र-छात्राओं के साथ जिला शिक्षा एवम प्रशिक्षण संस्थान (डायट) जनपद सोनभद्र के प्रांगण में उपस्थित होकर जनपद स्तरीय क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता में सहयोग प्रदान किये। जनपद स्तरीय क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता को संबोधित करते हुए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी जनपद सोनभद्र ने बच्चों को आगे बढ़ाने की मंगलमय कामना एवं हार्दिक बधाई देते हुए शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक उन्नयन की प्रगति में भारतवर्ष के सुयोग्य नागरिक बनने की कामना की। जनपद स्तर पर पीएम श्री विद्यालयों की पहली बार क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता आयोजित करने के शासन एवं सरकार के निर्देशों की सराहना सभी प्रतिभागी छात्र एवं छात्राओं शिक्षकों एवं उपस्थित अभिभावकों द्वारा की गई।

शहीद दिवस के अवसर पर देश के प्रति कुर्बानी देने वाले शहीदों को किया नमन

देश शहीदों के लिए सदा ऋणी रहेगा

रिपोर्ट- डा.बीरेन्द्र सरोज आजमगढ

मऊ / नेहरू युवा केंद्र - मऊ के तत्वाधान में शहीद दिवस कार्यक्रम का आयोजन आदर्श प्राइमरी पाठशाला राघव पट्टी विकास खण्ड परदहां मऊ में

किया गया। उक्त कार्यक्रम में अपने देश के लिए जान न्योछावर करने वाले अमर शहीदों भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव जी को याद कर द्वीप प्रज्वलन करते हुए उनके चित्र पर माल्यार्पण करके श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुरेंद्र कुमार भारती ने कहा कि यह तीनों क्रांतिकारी भारत के आजादी के लिए लड़े थे और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की नई दिशा प्रदान की थी। हम जनमानस इस समर्पण के प्रति सदैव ऋणी रहेंगे। इसी कड़ी में रमावती सेवा ट्रस्ट के संस्थापक अवनीश कुमार ने बताया कि 23 मार्च सन 1931 को तीनों क्रांतिकारियों को अंग्रेजी हुकूमत ने लाहौर षड्यंत्र के आरोप में फांसी पर लटकाया था। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में अमरजीत कुमार व आनंद कुमार चौहान समाजसेवी रहे। कार्यक्रम के दौरान आदर्श प्राइमरी पाठशाला की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।कार्यक्रम का संचालन नरेंद्र कुमार भारती व बलवंत कुमार द्वारा किया गया। उक्त दिवस के आयोजन पर गुलशन कुमार, दीपक कुमार, नवल किशोर, अमित कुमार यादव, अभिमान चंद, प्रदीप कुमार व ग्रामवासी मौजूद रहे।

मिशन शक्ति (फेज-05) अभियान के तहत सोनभद्र पुलिस द्वारा प्रतिदिन चलाया जा रहा महिला जागरूकता व सशक्तिकरण अभियान

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश।शासन द्वारा बालिकाओं/महिलाओं की सुरक्षा व महिला जागरूकता एवं सशक्तिकरण के दृष्टिगत चलाये जा रहे मिशन शक्ति (फेज-05) अभियान के तहत अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में महिलाओं/बालिकाओं की सुरक्षार्थ जनपद में गठित एण्टी रोमियों स्क्वाड द्वारा प्रतिदिन मंदिर/भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर गश्त कर बालिकाओं/महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूक एवं चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। उक्त निर्देश के क्रम में नारी सुरक्षा व नारी सम्मान हेतु चलाये जा रहे मिशन-शक्ति अभियान के अन्तर्गत जनपद के समस्त थानों मे गठित एण्टी रोमियो स्क्वाड टीम द्वारा स्कूलों/कॉलेजों, मंदिर/भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर

चेकिंग की गई तथा बालिकाओं/महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा सम्बन्धी उपायों के बारे में जागरूक किया गया तथा उपस्थित महिलाओं/बालिकाओं/छात्राओं को यूपी पुलिस द्वारा चलाई जा रही सुरक्षा संबंधित सेवाएं जैसे- वुमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 एवं अपने सीयूजी नम्बरों के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरूक किया गया। साथ ही साथ यह भी बताया गया कि अपने आस-पास के लोगों को साइबर अपराधों के बारे में जागरुक करें और उन्हें बतायें कि यदि कोई व्यक्ति साइबर धोखाधड़ी का शिकार हो जाता है तो उसकी सूचना तत्काल हेल्पलाइन नम्बर 1930/112 पर दें जिससे समय रहते ही अग्रिम कार्रवाई की जा सके।

शहीद दिवस के अवसर पर पोस्टर मेकिंग, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

रिपोर्ट- डा.बीरेन्द्र सरोज आजमगढ

मऊ। नेहरू युवा केंद्र आजमगढ़ युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में शहीद दिवस कार्यक्रम का आयोजन श्री हरिहर जी महाविद्यालय फरिहा निजामाबाद में किया गया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री लीलाधर यादव (प्राचार्य - श्री हरिहर जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय) जी ने अपने संबोधन में 23 मार्च के इस दिन के भारतीय इतिहास में महत्त्व के बारे में बताया कि कैसे इस दिन इन शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति देकर भारत को स्वतंत्रता की राह पर एक कदम और बढ़ाया था। भगत

सिंह, राजगुरु और सुखदेव न केवल अपने समय के महान क्रांतिकारी थे, बल्कि आज भी भारत के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं।शहीद दिवस के अवसर पर पोस्टर मेकिंग, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हर्षित विश्वकर्मा, द्वितीय स्थान शिवांगी यादव, तृतीय स्थान प्रांशु चौधरी ने प्राप्त किया ।विशिष्ट अतिथि डॉ0कनक चौरसिया (विभागाध्यक्ष - श्री हरिहर जी महाविद्यालय) के द्वारा विजेता प्रतिभागियो को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन माय भारत स्वयंसेवक बृजेश यादव ने किया।इस अवसर पर अविनाश यादव (निदेशक - हरिहर जी महाविद्यालय), श्री हरिहर जी इंटर कॉलेज के निदेशक दीपक यादव एवं अध्यापक शाहनवाज,अंकुर पटेल, राजेंद्र प्रजापति, सगुस्ता परवीन, प्रतिभा,किरन सरोज ,संगीता यादव, अल्पना यादव , गूंजा चौरसिया, अखिलेश यादव, आकाश यादव ,सोमेंद्र कुमार यादव (उप प्राचार्य - श्री हरिहर जी महाविद्यालय) आदि लोग उपस्थित रहे।

जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा) की बैठक सांसद की अध्यक्षता में सम्पन्न

न्यूजलाइन नेटवर्क - ब्यूरो रिपोर्ट
सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश। ''जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा)'' की बैठक आज कलेक्ट्रेट सभागार में सांसद लोक सभा क्षेत्र राबट्र्सगंज छोटेलाल खरवार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुईं, इस मौके पर सांसद छोटेलाल खरवार ने अधिकारीगण को निर्देशित करते हुए कहा कि अधिकारीगण अपने-अपने विभागों द्वारा संचालित विकास कार्यक्रमों और जन कल्याणकारी योजनाओं से सम्बन्धित सूचना जन प्रतिनिधियों के साथ ही ''जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति'' के सदस्यों को भी अवगत करायें। सांसद छोटेलाल खरवार ने कहा कि जनप्रतिनिधिगण व अधिकारीगण आपसी ताल-मेल के साथ जरूरी योजनाओं को लोगों तक पहुंचायें। जनमानस के विकास के लिए जो भी योजनाएं चलायी जा रही है, उन योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित किया जाये, उन्होंने कहा कि समन्वय के साथ विकास कार्यक्रमों व जन कल्याणकारी योजनाओं को अधिकारीगण/कार्यदायी संस्थाएं

पारदर्शिता, समयबद्धता के साथ पूर्ण किया जाये। सांसद ने ''जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति'' की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गॉधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम के तहत मनरेगा के तहत कराये गये कार्यों की समीक्षा करते हुए स्थानीय स्तर पर ज्यादा से ज्यादा रोजगार दिलाने व पूर्व में मनरेगा के तहत कराये गये कार्यो के बकाये पारिश्रमिक का भुगतान कराने के निर्देश दिये, उन्होंने शहरी व ग्रामीण आवास योजना, मनरेगा, दीन दयाल अन्त्योदय योजना, एनआएलएम, कौशल विकास योजना, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, जननी सुरक्षा योजना, बच्चों को नियमित टीकाकरण, राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन, राष्ट्रीय कुष्ठ रोग निवारण, कस्तुरबा गॉधी विद्यालय, भवन निर्माण, एकीकृत बाल विकास परियोजना, आंगनबाड़ी केन्द्रों के संचालन, बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ, निराश्रित महिला पेंशन, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, कृषि विभाग द्वारा संचालित जैविक खेती, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाईं योजना, समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम्य योजना, प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना, स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण व शहरी, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, डिजिटल इण्डिया भू-रिकार्ड आधुनीकीकरण कार्यक्रम, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, प्रधान मंत्री उज्जवला योजना, प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, श्याम प्रसाद मुखर्जी अर्बन मिशन, समेकित विद्युत विकास योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, परम्परागत कृषि विकास योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, प्रधान मंत्री रोजगार कार्यक्रम, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम आदि की समीक्षा करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि जो भी योजनाएं संचालित हैं, उन योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करने का कार्य किया जाये। आज की बैठक में ''जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति'' के सदस्यों द्वारा दिये गये सुझाव व मूलभूत समस्याओं का निराकरण सुव्यवस्थित ढंग से किया जाये, इस दौरान जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने सांसद व जनप्रतिनिधिगण द्वारा जो भी दिशा-निर्देश दिये गये हैं, उसका अनुपालन सभी अधिकारीगण नियमानुसार सुनिश्चित करेंगें। इस मौके पर अध्यक्ष जिला पंचायत राधिका पटेल, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष रूबी प्रसाद, विधायक दुद्धी के प्रतिनिधि राम अवध यादव सहित ब्लाक प्रमुखगण, ग्राम प्रधान व सम्मानित जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहें।मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव कुमार मिश्र, अपर जिलाधिकारी (नमामि गंगे) रोहित यादव, जिला विकास अधिकारी हेमन्त कुमार सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी अश्वनी कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, डी0सी0 एन0आर0एल0एम0 सरिता सिंह, डी0सी0 मनरेगा रविन्द्र वीर, अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा, जिला समाज कल्याण अधिकारी रमाशंकर यादव, जिला कार्यक्रम अधिकारी विनीत सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

टीबी के खिलाफ तेज करनी होगी जंग

रमेश सर्राफ धमोरा

वश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने वैश्विक क्षय रोग (टीबी) रिपोर्ट 2024 जारी किया है। जिसमें 2024 में दुनिया की 99 प्रतिशत से अधिक आबादी और टीबी के मामलों वाले 193 देशों के डाटा की रिपोर्ट को शामिल किया गया है। यह रिपोर्ट वैश्विक, क्षेत्रीय और देश स्तर पर टीबी महामारी एवं रोग की रोकथाम, निदान और उपचार में प्रगति का व्यापक व अद्यतन मूल्यांकन प्रदान करती है। रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष के अनुसार 2023 में भारत में लगभग 25.2 लाख टीबी के मामले सामने आये थे।

भारत काफी लंबे समय से टीबी नामक बिमारी से जंग लड़ रहा है। लेकिन अब टीबी को लेकर एक डरावनी स्टडी सामने आई है। जर्नल प्लस मेडिसीन की स्टडी के मुताबिक भारत में अनुमान है कि 2021 से 2040 तक टीबी के 6 करोड़ केस और 80 लाख मौतें हो सकती है। स्टडी के मुताबिक भारत को इस बिमारी के चलते न सिर्फ जान का नुकसान होगा बल्कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को 146 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान होने की संभावना है। लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन यूके के रिसर्चर ने कहा कि इसके चलते कम आय वाले मिडिल क्लास परिवार ज्यादा संकट में है। उनको स्वास्थ्य संबंधी बोझ झेलना पड़ सकता है। जबकि अमीर परिवारों को आर्थिक बोझ झेलना पड़ सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने वैश्विक क्षय रोग (टीबी) रिपोर्ट 2024 जारी किया है। जिसमें 2024 में दुनिया की 99 प्रतिशत से अधिक आबादी और टीबी के मामलों वाले 193 देशों के डाटा की रिपोर्ट को शामिल किया गया है। यह रिपोर्ट वैश्विक, क्षेत्रीय और देश स्तर पर टीबी महामारी एवं रोग की रोकथाम, निदान और उपचार में प्रगति का व्यापक व अद्यतन मूल्यांकन प्रदान करती है। रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष के अनुसार 2023 में भारत में लगभग 25.2 लाख टीबी के मामले सामने आये थे। जो 2022 में 24.2 लाख मामलों से अधिक थे। भारत और इंडोनेशिया में वर्ष 2021 से 2023 तक टीबी के वैश्विक मामलों में कुल वृद्धि 45 प्रतिशत थी। दुनिया के पांच देश भारत, इंडोनेशिया चीन, फिलीपींस, पाकिस्तान में टीबी के कुल वैश्विक मरीजो के 56 प्रतिशत थे।

भारत में वर्ष 2015 से 2023 के मध्य टीबी के मामलों में 18 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2025 तक 50 प्रतिशत कमी के लक्ष्य से बहुत कम है। इसी प्रकार टीबी से संबंधित मौतों में 75 प्रतिशत के लक्ष्य के मुकाबले केवल 24 प्रतिशत की कमी आई है। वैश्विक स्तर पर 2023 में 82 लाख लोगों में टीबी के नए मामलें देखे गए। यह वर्ष 1995 में डब्ल्यूएचओ द्वारा निगरानी शुरू करने के बाद से सबसे अधिक संख्या है। 2023 में टीबी कोविड-19 को पीछे छोड़ते हुए पुनः प्रमुख संक्रामक रोग बन गया है।

टीबी एक संक्रामक बीमारी है। जो संक्रमित लोगों के खांसने, छींकने या थूकने से फैलती है। यह आमतौर पर फेफड़ों को प्रभावित करती है। लेकिन यह शरीर के किसी

भी हिस्से में फैल सकती है। इस बीमारी का इलाज तो है बशर्ते लोग नियमित रूप से दवा लें। हर वर्ष 24 मार्च को पूरे विश्व में टीबी (विश्व क्षय रोग) दिवस मनाया जाता है। इस दिन टीबी यानि तपेदिक रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है। भारत में बहुत बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन गुजार रही है। देश में जब तक गरीबी दूर नहीं होगी तब तक टीबी पर पूर्णतया रोक नहीं लग पायेगी।

एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में स्वास्थ्य सेवा का बड़ा ढांचा कमजोर है और स्वास्थ्य कर्मचारियों की भारी कमी है। इसके अलावा बीमारी का शुरूआती दौर में पता लगने में दिक्कत और सही इलाज का मिलना चुनौती बनी हुई है। विश्व में भारत पर टीबी का बोझ सबसे अधिक है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में टीबी उन्मूलन को प्राथमिकता के तौर पर लिया गया है। इसका उद्देश्य टीबी के नए मामलों में 95 प्रतिशत की कमी करना और टीबी से मृत्यु में 95 प्रतिशत की कमी लाना है। देश में जिन टीबी रोगियों का इलाज चल रहा है उन्हें सरकार द्धारा 500 रुपए प्रतिमाह नगद सहायता के रूप में दिए जा रहें हैं। टी.बी माइक्रोबैक्टीरियम नामक बैक्टीरिया की वजह से होता है। यह बैक्टीरिया फेफड़ों में उत्पन्न होकर उसमें घाव कर देते हैं। यह कीटाणु फेफड़ों, त्वचा, जोड़ों, मेरूदण्ड, कण्ठ, हड्डियों, अंतडियों आदि पर हमला कर सकते हैं। दुनिया में छह-सात करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं और हर वर्ष 25 से 30 लाख लोगों की इससे मौत हो जाती है। दुनिया में बीमरियों से मौत के 10 शीर्ष कारणों में टीबी को प्रमुख बताया गया है।

एक अनुमान के मुताबिक भारत में रोजाना करीब आठ सौ लोगों की मौत टीबी की वजह से हो जाती है। भारत में टीबी के करीब 10 प्रतिशत मामले बच्चों में हैं। लेकिन इसमें से केवल छह प्रतिशत मामले ही सामने आते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि भारत में टीबी के केवल 58 प्रतिशत मामले ही दर्ज होते हैं। एक तिहाई से ज्यादा मामले या तो दर्ज ही नहीं होते हैं या उनका इलाज नहीं हो पाता है। इसका बड़ा कारण यह है कि गैर सरकारी सेक्टर के अस्पतालों में टीबी को दर्ज किए जाने का अब तक कोई सिस्टम नहीं बना पाना है। संगठन का ऐसा अनुमान है कि ऐसे तकरीबन दस लाख और टीबी मरीज देश में है जिन्हें पहचाना ही नहीं जा सका है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि भारत टीबी से निपटने को लेकर गंभीर नहीं है। अपनी ग्लोबल टीबी रिपोर्ट में उसने हमारे आंकड़ों पर भी सवाल उठाया है। उसके मुताबिक भारत ने टीबी के जितने मामले बताए हैं। वास्तव में मरीज उससे कहीं ज्यादा हैं। भारत के गलत आंकड़ों की वजह से इस रोग का विश्वस्तरीय आकलन सही ढंग से नहीं हो पाया है। पिछले कुछ समय से टीबी के कई नए रूप सामने आ गए हैं। कई मानसिक बीमारियां टीबी का बड़ा कारण बनकर उभरी हैं। इस बीमारी को लेकर हमे नजरिया बदलने की जरूरत है। सरकार को परम्परागत तौर-तरीके से बाहर निकलना होगा। टीबी से निपटने के लिए सरकार को निजी क्षेत्र के साथ मिलकर व्यापक योजना बनानी होगी।

टीबी का संबंध पोषण से जुड़ा रहता है। भूखे पेट रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए टीबी की बीमारी के शिकार गरीब तबके के लोग ज्यादा होते हैं। पोषण से मतलब संतुलित भोजन से माना जाना चाहिए। इसलिए यहां पर केवल टीबी का इलाज मुहैया करा भर देने से टीबी का खात्मा संभव नहीं है। यह तब मुमकिन होगा जबकि देश में लोगों को रोग प्रतिरोधक ताकत बनाए रखने के लिए संतुलित आहार भी मिले।

कुछ वर्षों पूर्व तक टीबी की बीमारी को लाईलाज रोग माना जाता था। टीबी के मरीजो को घर से अलग रखा जाता था व उससे अछूत जैसा व्यवहार किया जाता था। मगर अब टीबी की बीमारी का देश में पर्याप्त उपचार व दवा उपलब्ध है। टीबी के रोगियों द्वारा नियमित दवा के सेवन से नो माह में ही टीबी का रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है। सरकार को टीबी रोग की प्रभावी रोकथाम के लिये बजट में स्वास्थ्य सुविधओं के विस्तार के लिये और अधिक राशि का प्रावधान करना होगा। टीबी के प्रति लोगों को सचेत करने के लिये देश भर में टीबी जागरूकता कार्यक्रम चलाने होंगे। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केन्द्रो की संख्या बढ़ाकर ही टीबी पर काबू पाया जा सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक सरकार को इस क्षेत्र में एक ठोस अभियान शुरू करना होगा और साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इस जानलेवा बीमारी पर काबू पाने की राह में पैसों की कमी आड़े नहीं आए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो इससे मरने वालों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी होगी। सरकार ने टीबी रोग को मिटाने के लिये जो प्रतिबद्धता जतायी है उस पर तुरन्त अमल करने की जरूरत है। विश्व क्षयरोग दिवस 2025 की थीम है हां हम टीबी को समाप्त कर सकते हैं। प्रतिबद्ध हों, निवेश करें, परिणाम दें। यह टीबी को समाप्त करने के लिए चल रहे प्रयासों पर विचार करने और स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। जिसमें दवा प्रतिरोधी टीबी के बढ़ते खतरे का मुकाबला करना भी शामिल है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

संपादकीय

शोषणमुक्त हो भारत

केंद्र की वर्तमान सरकार का नक्सलमुक्त भारत अभियान अपनी गति पर है। छत्तीसगढ़ के बीजापुर और कांकेर में सुरक्षा बलों के दो अलग-अलग अभियानों में 30 नक्सली मारे गए। गृह मंत्रालय के अनुसार 2025 के इन तीन महीनों में 90 नक्सली मारे जा चुके हैं, 204 को गिरफ्तार किया गया है और 164 ने आत्मसमर्पण किया है। 2024 में 290 नक्सलियों को मार गिराया गया था। 2004 से 2014 के दौरान नक्सली हिंसा की कुल 16,463 घटनाएं हुई थीं। अब मोदी सरकारा के कार्यकाल में 2014-24 के बीच नक्सली हिंसा की संख्या 53 फीसद घटकर 7,444 रह गई है। इन आंकड़ों को देखकर लगता है कि गृह मंत्री अमित शाह 31 मार्च, 2026 तक देश से नक्सलवाद को खत्म करने का अपना संकल्प पूरा कर लेंगे। नक्सलवादी आंदोलन की भीतरी स्थिति क्या है, यह मालूम करने के स्रोत सूख गए हैं। अब जिस तरह का माहौल बन गया है, या सरकार ने बना दिया है, उसमें अब कोई भी न तो नक्सलवादियों की जमीनी हकीकत को सामने लाने की स्थिति में है और न उनके विचारधारात्मक पक्ष की वकालत करने की स्थिति में है। सरकार प्रायः जिस अर्बन नक्सलवाद शब्द का प्रयोग करती है और जिन-जिन बौद्धिक या वैचारिक समूहों पर शहरी नक्सलवादी होने का आरोप लगाती है, वे भी वस्तुतः सरकार विरोधी हैं, नक्सलवाद समर्थक कम। यह इस दौर का ठोस यथार्थ है कि नक्सलवाद की जमीन अब खत्म हो गई है। मुख्य धारा का कोई भी राजनीतिक दल या क्षेत्रीय दल दलितों-आदिवासियों के शोषण को अपनी राजनीति के केंद्र में नहीं रखता। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के आदिवासी समूह न केवल बढ़-चढ़ कर चुनावी प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं, बल्कि नक्सलवाद को अपने लिए अवरोधक मानकर उसके प्रति तिरस्कार का रुख अपना रहे हैं। इन परिस्थितियों में नक्सलवादियों के लिए शायद यही श्रेष्ठ विकल्प है कि वे अपनी रणनीति बदलें और हथियार छोड़क र देश भर में व्याप्त शोषण और अन्याय के विरुद्धवैचारिक विमर्श की रणनीति अपनाएं। इससे हो सकता है कि मौजूदा राजनीति को शोषण को समझने और उससे निपटने के लिए एक अधिक प्रभावी दृष्टि उपलब्ध हो।

चिंतन-मनन

भगवान की विचारणाएं

जब मनुष्य इस जिम्मेदारी को समझ ले कि मैं क्यों पैदा हुआ हूं और पैदा हुआ हूं तो मुझे क्या करना चाहिए? भगवान द्वारा सोचना, विचारना, बोलना, भावनाएं आदि अमानतें मनुष्य को इसलिए नहीं दी गई हैं कि उनके द्वारा वह सुख-सुविधाएं या विलासिता के साधन जुटा अपना अहंकार पूरा करे बल्कि इसलिए दी गयी हैं ताकि इनके माध्यम से वह विश्व को अधिक सुन्दर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न कर।

बैंक के खजांची के पास धन इसलिए रखा रहता है ताकि सरकारी प्रयोजनों के लिए इस पैसे को खर्च कर। खजाने में रखे लाखों रुपये खजांची कैसे खर्च कर सकता है। अपने लिए उसे उतना ही इस्तेमाल करने का हक है, जितना उसे वेतन मिलता है। पुलिस और फौज का कमांडर है, उसको अपना वेतन लेकर जितनी सुविधाएं मिली हैं, उसी से काम चलाना चाहिए। बाकी बहुत सारी सामर्थ्य और शक्ति उसे बंदूक चलाने के लिए मिली है, उसे सिर्फ उसी काम में खर्च करना चाहिए, जिसके लिए सरकार ने उसको सौंपा है। हमारी सरकार भगवान है और मनुष्य के पास जो कुछ विभूतियां, अक्ल और विशेषताएं हैं, वे व्यक्तिगत ऐय्याशी सुविधा और शौक-मौज के लिए नहीं हैं। व्यक्तिगत अहंकार की तृप्ति के लिए नहीं है। भगवान का बस एक ही उद्देश्य है- निरूस्वार्थ प्रेम। इसके आधार पर भगवान ने मनुष्य को इतना ज्यादा प्यार किया। मनुष्य को उस तरह का मस्तिष्क दिया है, जितना कीमती कम्प्यूटर दुनिया में आज तक नहीं बना। मनुष्य की आंखें, कान, नाक, वाणी एक से एक चीजें हैं, जिनकी रुपयों में कीमत नहीं आंकी जाती है। मनुष्य के सोचने का तरीका इतना बेहतरीन है, जिसके ऊपर सारी दुनिया की दौलत न्योछावर की जा सकती है। ऐसा कीमती मनुष्य और ऐसा समर्थ मनुष्य जिस भगवान ने बनाया है, उसकी यह आकांक्षा जरूर रही है कि दुनिया को समुन्नत और सुखी बनाने में यह प्राणी मेरे सहायक के रूप में काम करेगा और मेरी सृष्टि को समुन्नत रखेगा। मानव जीवन की विशेषताओं और भगवान द्वारा विशेष विभूतियां मनुष्य को देने का एक और उद्देश्य है। जब मनुष्य इस जिम्मेदारी को समझ ले कि मैं क्यों पैदा हुआ हूं और पैदा हुआ हूं तो मुझे क्या करना चाहिए तो समझना चाहिए कि इस आदमी का नाम मनुष्य है, इसके भीतर मनुष्यता का उदय हुआ और इसके अंदर भगवान की विचारणाएं उदित हो गयीं।

वैश्विकी : गाजा की अंतहीन त्रासदी

डॉ. दिलीप चौबे

गाजा में फिलिस्तीनियों का नरसंहार फिर शुरू हो गया है। सीमित संघर्ष विराम और कुछ बंधकों की रिहाई के बाद पिछले दो-तीन दिनों में करीब 700 लोग मारे गए। करीब डेढ़ साल पहले शुरू हुए इस रक्तपात के दौर में यह सबसे बड़ी त्रासदी हुई। इस बार दुनिया के अधिकतर देशों की चुप्पी और निराशाजनक रही।

दुनिया में शांतिदूत होने का दावा करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस्त्राइल के साथ पूरी तरह खड़े नजर आए। उन्होंने बेंजामिन नेतन्याहू को मनमाने तरीके से निर्दोष बच्चों और महिलाओं का नरसंहार करने की हरी झंडी दिखा दी। ट्रंप को यूक्रेन में सैनिकों के मारे जाने की बहुत चिंता है लेकिन वह गाजा में बच्चों और महिलाओं पर अत्याचार को लेकर चुप हैं। इतना ही नहीं ट्रंप प्रशासन ने इस्त्राइल के खिलाफ अमेरिका के विश्वविद्यालय में होने प्रदर्शनों को रोकने के लिए दमनकारी हथकंडे अपनाए हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों की फंडिंग बंद की जा रही है तथा प्रदर्शन में भाग लेने वाले छात्र नेताओं को देश से निकलने का

सिलसिला शुरू हुआ है।

भारतीय मूल के कुछ विद्यार्थियों पर भी गाज गिरी है। आश्चर्य की बात यह है कि इस्त्राइल का साथ देने में अमेरिका के दोनों प्रमुख राजनीतिक दल एक दूसरे से होड़ करते हैं। पिछले बाइडेन प्रशासन ने भी इस्त्राइल का पूरा साथ दिया था। अंतर केवल इतना था कि वह नागरिक जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने की सलाह देता था। वास्तव में विरोधी डेमोक्रेटिक पार्टी इस्त्राइल के प्रति ज्यादा अनुकूल रही है। राष्ट्रपति ट्रंप पुरानी नीतियों को खुले रूप से और अधिक शिद्दत से आगे बढ़ा रहे हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार अमेरिका में इस्त्राइली लॉबी बहुत मजबूत है। यद्यपि यहूदी लोगों की संख्या 1 करोड़ से भी कम है। कुछ आलोचकों का तो यह भी आरोप है कि अमेरिका की राजनीति और अर्थव्यवस्था पर इस्त्राइल समर्थक तत्वों का कब्जा है। दूसरे शब्दों में इन आलोचकों का आरोप है इस्त्राइल ने अमेरिका को बंधक बना रखा है। अमेरिका को छोड़ भी दिया जाए तो इस बात का क्या औचित्य है कि शेष दुनिया भी गाजा त्रासदी को लेकर निष्क्रिय बनी हुई है। दुनिया में मुस्लिम देशों की संख्या ५० से अधिक है जिसमें से अधिकतर सुन्नी देश हैं। फिलिस्तीन में इस्त्राइल की बर्बरता का शिकार सुन्नी मुसलमान बन रहे हैं। आखिर फिर सुन्नी देश हाथ पैर हाथ रखकर क्यों बैठे हैं? इन देशों ने बयान जारी करने के अलावा कोई ठोस कदम नहीं उठाया। फिलिस्तीन के समर्थन में केवल शिया प्रभाव वाले देशों और संगठनों ने कार्रवाई की। उन्हें ही सबसे अधिक नुकसान का सामना करना पड़ा। लेबनान के छापामार संगठन हिज्जबुल्ला का पूरा नेतृत्व मारा गया। सीरिया में बरार अल असद को सत्ता गंवानी पड़ी। सीरिया पर जेहादी संगठन एचटीएस काबिज हैङ्क लेकिन इसके लड़ाकू इस्त्राइल के खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय अल्पसंख्यक शिया अलवी और ईसाई लोगों पर कह ढरू रहे हैं।

ईरान को अपनी सुरक्षा को लेकर नये खतरे का सामना करना पड़ रहा है। कुछ समीक्षकों का तो यह भी अनुमान है कि आने वाले दिनों में अमेरिका और इस्त्राइल मिलकर ईरान के खिलाफ सैनिक कार्रवाई करेंगे। यूक्रेन के मामले में राष्ट्रपति ट्रंप रूस के प्रति जो उदार रवैया अपना रहे हैं उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि वह ईरान के संदर्भ में रूस को तटस्थ रहने पर राजी कर ले।

आजादी के बाद से भारत फिलिस्तीनी लोगों के अधिकारों का सबसे बड़ा हिमायती रहा है। साथ ही वह धर्मनिरपेक्ष और उदारवादी मुस्लिम देशों का दोस्त भी रहा है। लेकिन भू-राजनीतिक कारणों और राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के कारण भारत ने अपने रवैये में बदलाव किया है। भारत लंबे समय से जेहादी आतंकवाद का शिकार रहा है।

इस दौर में अधिकतर मुस्लिम देशों ने भारत का खुलकर समर्थन नहीं किया। दूसरी ओर इस्त्राइल ने खुफिया सूचनाओं के साथ ही आतंकवाद विरोधी प्रौद्योगिकी मुहैया कराई। इसी रणनीतिक यथार्थ के कारण मौजूदा सरकार इस्त्राइल की खुलकर आलोचना करने से बचती है। देश के अधिकतर राजनीतिक दल सरकार की इस मजबूरी को समझते हैं।

देश में समाप्त करने होंगे विभागों के पर्सनल ला

देश में व्यवस्थाओं के नाम पर अव्यवस्थायें फैलाने की कोशिशें निरंतर तेज होती जा रहीं हैं। नियमों के नाम पर पर्सनल ला बनाने का क्रम बढता जा रहा है। स्वाधीनता के बाद संविधान निर्माण के दौरान जहां जातियों, सम्प्रदायों, स्थानों, भाषाओं, क्षेत्रों, संस्कृतियों के आधार पर विभाजन करने वाले विशेष कानूनों का प्राविधान किया गया ताकि भविष्य में सत्ता का संचालन चन्द लोगों के हाथों में ही रह सके, तो दूसरी ओर लालफीताशाही ने कार्यपालिका को निरंकुश बनाने की दिशा में विभागों को मनमाने आचरण करने की छूट देने की गरज से अलग-अलग कानूनों का निर्माण कर लिया। विधायिका के सत्ता पक्ष ने अपनी ठेकेदार पार्टी के हितों के साथ स्वयं की स्वार्थपूर्ति को स्थायित्व देने की नियत से नागरिकों को मुफ्तखोरी की आदत डालकर उन्हें हरामखोर बनाने की प्रतिस्पर्धा जीतने में जी-जान लगा दी। परिणामस्वरूप हरामखोरों ने बडी-बडी जमातें बनाकर आपराधिक वारदातों से धनकुबेर का पदग्रहण करके विलासता की दिशा में बढना शुरू कर दिया। जातिगत एकता के नाम पर चन्द चालाक लोगों ने नेता बनकर विष वमन के माध्यम से सामाजिक खाई को चौडा किया। सम्प्रदाय विशेष के हितों को संरक्षित करने का दिखावा करने वाले मजहबी उस्तादों ने अतीत की इबारतों को दोहराने की कसमें खाना शुरू कर दी। ऐसे में देश की जडों में मट्ठा पिलाने की कबायत करने वाले कार्यपालिका के चन्द अधिकारियों ने अपनी तन, मन और धन की असीमित हवस को शान्त करने हेतु विशेष कानूनों के दायरे बढाने शुरू कर दिये। अतीत के पन्ने पलटने पर ज्ञात होता है कि स्वाधीनता के दौरान कलेक्टर के पद पर तैनात व्यक्ति के पास केवल राजस्व विभाग के सीमित अधिकार होते थे जो वर्तमान में असीमित घोषित हो गये हैं। पैर रखने का अधिकार पाने वाले ने आहिस्ता-आहिस्ता सुख-सुविधायुक्त विश्राम का आशियाना खडा कर लिया है, गुलामों की फौज पैदा कर ली है और जोड लिया है यशगान करने वालों का कुनवा। बात केवल कलेक्टर तक ही सीमित नहीं है। सोची-समझी योजना के तहत जिस तरह से राजस्व वसूली का जिला मुखिया समूचे जिले का बादशाह बन गया उसी तरह सभी विभाग प्रमुखों ने अपने लिये विशेष अधिनियम, कानून और प्राविधानों का निर्माण कर लिया है। न्याय विभाग, वन विभाग, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य विभाग, आबकारी विभाग, परिवहन विभाग जैसे लगभग सभी विभागों ने अपने-अपने कानूनी दायरे बढाकर मनमानियों, तानाशाही और अनियमितताओं पर कवच लगा लिया है। पुलिस विभाग की तो अपनी अलग ही कहानी है। याचक की पुकार सुनने वालों पर आरोपों की अनगिनत कहानियां स्वयं ही कानून की धज्जियां उडाने वाले कथानकों से भरी पडीं हैं। सभी की अपनी अलग-अलग तानाशाही है। अलग-अलग ढपली पर अलग-अलग राग अलापे जा रहे हैं। कई बार तो विभिन्न विभागों के मध्य भी अधिकारों की जंग छिड जाती है। वर्तमान के ही अनेक उदाहरण देश के विशेषाधिकारों के युध्द की नई परिभाषायें लिख रहे हैं। देश की सीमा पर जान की बाजी लगाकर नागरिकों को सुख की नींद सोने का अवसर प्रदान करने वाली सेना के कर्नल पुष्पेन्दर सिंह बाठ को पटियाला में पंजाब पुलिस ने न केवल बेरहमी से पीटा बल्कि उसके पुत्र को भी अपने जुल्म का शिकार बनाया। हड्डियां तोड देने तक किये गये पुलिसिया प्रहार की प्राथमिकी भी दर्ज नहीं की गई। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गोमती नगर डिवीजन के ग्वारी पावर हाउस से जुडे उपभोक्ताओं के विद्युत संयोजन मनमानी वसूली के बाद भी विच्छेद कर दिये गये। इसी तरह छतरपुर जिले में मध्यप्रदेश के विद्युत विभाग के अधिकारियों ने बिजली के बिल जमा करने के बाद भी गढीमलहरा क्षेत्र के कलानी गांवों के निवासियों की बिजली काट कर अपनी बेलगाम कार्यशैली की बानगी पेश की है। पैसों की वसूली के बाद भी रसीद न देने के आरोप भी ग्रामीणों ने विभाग के उत्तरदायी अधिकारियों पर लगाये हैं। बार अभ्यारण्य के अफसरों के मनमाने फरमान के विरोध में गाइड एवं जिप्सी संघ व्दारा अनिश्चितकालीन हडताल की घोषणा भी नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गई। सरकारी चिकित्सालयों में तैनात अनेक डाक्टरों की मनमानी के शिकार हो रहे मरीजों-तामीरदारों की संख्या में बेतहाशा वृध्दि हो रही है। सरकारी सप्लाई वाली दवाओं के उपलब्ध होने के बाद भी खुले बाजार की दवाओं के लिए तामीरदारों को मजबूर करने वाले चिकित्सक आपरेशन के दौरान अपने दलालों के माध्यम से सुविधा शुल्क वसूलने में जुटे हैं। कार में बैल्ट तथा बाइक में हैलमेट न लगाने वालों का चालान काटने वालों को बिना नम्बर प्लेट के डम्पर, टैक्टर, आटो रिक्सा, लोडर, पिकअप आदि वाहन तथा बिना फिटनेश के बस और ट्रक नहीं दिखाई पडते हैं। अनेक ढाबों के केबिनों में अवैध रूप से चल रहे दारू दंगल को अदृष्टिगत करने वाले उत्तरदायी अधिकारियों व्दारा कागजी खानापूर्ति के लिए निरीह लोगों पर शिकंजा करने वाले प्रकरण भी बढते जा रहे हैं। सफेदपोश नेतृत्व की आड में पूरा कुनवा ही कानून की धज्जियां उडाने का लाइसेंसी बन जाता है। निजी वाहनों पर विभाग का नाम, पद का नाम लिखकर धौंस जमाने वालों की असीमित संख्या खुलेआम संविधानिक व्यवस्था का मुखौल उडा रही है। सरकारी अमले में तैनात व्यक्ति के परिवारजनों, संबंधीजनों तथा स्वजनों के निज निवासों से लेकर स्वयं के संसाधनों तक पर विभाग का नाम मोटे-मोटे अक्षरों में अंकित देखा जा सकता है। पुलिस लिखे वाहनों की संख्या सबसे अधिक पायी जाती है। एम्बुलेन्स वाहनों का अवैध परिवाहन तो कोरोना काल में समूचे देश ने देखा है। सभी विभागों के अपने-अपने विशेषाधिकार कानूनों ने देश के नागरिकों को रक्तपिपासुओं के मध्य कैद कर दिया है। इन कैदियों की संख्या में तो अब विधायिका के सदस्यों तक के नाम भी जुडने लगे हैं। आश्चर्य होता है कि कार्यपालिका के उत्तरदायी अधिकारियों पर उपेक्षा का आरोप लगाते हुए देश की राजधानी दिल्ली के विधानसभा अध्यक्ष विजेन्द्र गुप्ता को प्रदेश की कार्यपालिका के मुखिया यानी मुख्य सचिव धर्मेन्द्र को पत्र लिखना पडा। पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रदेश के विभिन्न अधिकारी सदन के माननीय सदस्यों के पत्रों, फोन काल्स तथा संदेशों को स्वीकार तक नहीं करते हैं। विधायिका पर हावी होती कार्यपालिका का यह कीर्तिमानी उदाहरण शायद ही किसी लोकतांत्रिक देश में देखने को मिला हो। विधानसभा अध्यक्ष का यह पत्र स्पष्ट करता है कि सरकारी सीयूजी मोबाइल फोन्स, इन्टरनेट कनेक्शन, वातानुकूलित कार्यालय, सुविधायुक्त आवास, लग्जरी सेवाओं जैसे दर्जनों संसाधन देने के बाद भी कार्यपालिका का रवैया अपने आम में स्वयं के निर्णय पर ही चलता है। उत्तर प्रदेश का कमीशनखोरी का मामला तो इन्वेस्टर्स के मध्य खासा चर्चित है जहां विधायिका व्दारा आमंत्रित अतिथियों के प्रस्तावों पर अन्तिम स्वीकृति के लिए पापड बेलने के नये तरीकों को रेखांकित किया जा रहा है। कार्यपालिका के अनेक उत्तरदायी अधिकारियों की स्वार्थपरितापूर्ण मनमानी कार्य प्रणाली की बढती संख्या से जहां आम नागरिक हताशा के मध्य से गुजर रहा है वहीं इन्वेस्टमेन्ट के लिए भेजे जाने वाले न्योते भी बैरंग वापिस आने शुरू हो गये हैं। कार्यपालिका का यह दिखने वाला स्वरूप विकास की संभावनाओं पर पानी फेरता प्रतीत हो रहा है। इस हेतु आम आवाम को व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप की स्वयं समीक्षा करना पडेगी, तस्वीर संवारने के प्रयास करना पडेंगे और खडा होना होगा कमर कसकर अन्याय के विरुध्द तभी सार्थक परिणामों की संभावना पैदा हो सकेगी। समय रहते देश में समाप्त करने होंगे विभागों के पर्सनल ला तभी एक देश-एक कानून की परिकल्पना साकार हो सकेगी। इस बार बस इतना ही। अगले सप्ताह एक नई आहट के साथ फिर मुलाकात होगी।

-डा. रवीन्द्र अरजरिया

लायंस क्लब सावर के निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में 110 रोगियों की हुई जांच उसमें से 35 का ऑपरेशन के लिए हुआ चयन

न्यूज़ लाईन नेटवर्क रिपोर्ट केकड़ी खुशीराम गुर्जर

केकड़ी सावर लायंस क्लब सावर के तत्वाधान में डीडी नेत्र फाउंडेशन कोटा के द्वारा स्वर्गीय अनोप देवी और स्वर्गीय लादू राम सुवालका सावर वालों की पुण्य स्मृति में सुवालका परिवार द्वारा रविवार को नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया शिविर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि उपखंड अधिकारी कपासन राजेश सुवालका ने कहा कि जरूरतमंद की सेवा करना हम सभी व्यक्तियों का कर्तव्य है एवं रामकिशन सुवालका ने कहा कि मानव सेवा से बढ़कर दुनिया में कोई धर्म नहीं है उन्होंने कहा कि आज का पुण्यार्जन का लाभ हमें दिया गया इसके लिए लायंस क्लब का बहुत-बहुत साधुवाद करता हूं लायंस क्लब अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद सुवालका ने शिविर की जानकारी देते हुए कहां की नेत्र ज्योति दिलाना एक यज्ञ करने के बराबर हैं शिविर में राजीव सुवालका मुकेश सुवालका डॉक्टर लोकेश कुमार सुवालका डॉक्टर यशवंत कुमार सुवालका भंवर सुवालका संदीप सुवालका आदित्य सुवालका

लक्ष्य राज सुवालका विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे वहीं शिविर के शुभारंभ से पूर्व सभी अतिथियों ने गणेश जी की मूर्ति के सामने दीप प्रज्वलित कर सभी को जीवन में रोशनी देने की प्रार्थना की समारोह की अध्यक्षता लायन रामेश्वर प्रसाद सुवालका ने की कार्यक्रम का संचालन लायन राजेंद्र प्रताप सिंह शक्तावत ने किया क्लब के सचिव अशोक कुमार जैन ने बताया कि शिविर में 110 नेत्र रोगियों की जांच की गई सभी की शुगर और बीपी की जांच भी की गई तथा सभी मरीजों को भोजन कराया गया इसमें 35 रोगी आंखों के ऑपरेशन के योग्य पाए गए उन्हें रविवार को ही ऑपरेशन के लिए बस द्वारा कोटा ले गया वहीं कोषाध्यक्ष अविनाश कोठारी ने बताया कि सभी के ऑपरेशन 24 मार्च को कोटा में होंगे कोटा लाने व लगान एवं आवास व्यवस्था चश्मा वितरण का कार्य निःशुल्क किया जाएगा लायन विलोप जैन ने बताया कि मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा शिविर में नाक काम गला विशेषज्ञ डॉ लोकेश कुमार सुवालका, डॉक्टर यशवंत कुमार सुवालका, भंवर सुवालका, संदीप सुवालका, आदित्य सुवालका, लक्ष्य राज सुवालका विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे वहीं शिविर के शुभारंभ से पूर्व सभी अतिथियों ने गणेश जी की मूर्ति के सामने दीप प्रज्वलित कर सभी को जीवन में रोशनी देने की प्रार्थना की समारोह की अध्यक्षता लायन रामेश्वर प्रसाद सुवालका ने की कार्यक्रम का संचालन लायन राजेंद्र प्रताप सिंह शक्तावत ने किया क्लब के सचिव अशोक कुमार जैन ने बताया कि शिविर में 110 नेत्र रोगियों की जांच की गई सभी की शुगर और बीपी की जांच भी की गई तथा सभी मरीजों को भोजन कराया गया इसमें 35 रोगी आंखों के ऑपरेशन के योग्य पाए गए उन्हें रविवार को ही ऑपरेशन के लिए बस द्वारा कोटा ले जाया गया वहीं कोषाध्यक्ष अविनाश कोठारी ने बताया कि सभी रोगियों के ऑपरेशन 24 मार्च को कोटा में होंगे कोटा लाने व ले जाने एवं आवास व्यवस्था चश्मा वितरण का कार्य निःशुल्क किया जाएगा लायन विलोप जैन ने बताया कि मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा शिविर में नाक काम गला विशेषज्ञ डॉ लोकेश सुवालका ने 35 मरीजों की जांच कर निःशुल्क दवा प्रदान की गई लायन रामदेव प्रजापत ने बताया कि बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर यशवंत सुवालका ने 25 बालकों की जांच कर निःशुल्क दवा वितरित की गई डॉ रामेश्वर चौधरी ने फिजियोथेरेपी के 25 मरीजों की जांच कर इलाज किया शिविर डी डी नेत्रालय कोटा के डॉक्टर निखिल कंपाउंडर अनिल सुमन, दुर्गेश नायक लोकेश शर्मा अर्जुन कुशवाहा, नरेन्द्र लोधा कमलेश वर्मा एवं गिरिराज ने रोगियों की जांच में सहयोग किया लायन सुशीला सुवालका, लायन किरण जैन लायन कैलाशी देवी लायन पूनम सैनी एवं सत्यनारायण पंवार केदारमल जांगिड़ राजेश सुवालका दिलकश सुवालका, राहुल जांगिड़, राजकीय चिकित्सालय सावर से अरुण गर्ग कृतिका तथा सेवानिवृत अध्यापक गोपाल लाल वैष्णव तंजीम खान कैलाश चंद्र श्याम लाल नुवाल ने सराहनीय सेवाएं दी।

सरवाड़: कालाबड़ में विशाल भंडारे का हुआ आयोजन

हजारों श्रद्धालुओं ने लिया भाग

न्यूज़ लाईन नेटवर्क रिपोर्ट आशुतोष त्रिपाठी सरवाड़

सरवाड़ निकटवर्ती फतेहगढ़ के पास स्थित कालाबड़में रविवार को कालाबड़ में दिवंगत महंत बाबा बालकदास महाराज के देवलोकगमन पर आयोजित विशाल भंडारे का आयोजन किया गया वहीं इस अवसर पर सभी संप्रदायों के संतो ने शिरकत की वहीं भंडारे के साथ ही बाबा बालकदास महाराज की चरण पादुका की स्थापना की गई कार्यक्रम में चतुर संप्रदाय के अध्यक्ष श्री हनुमान दास महाराज जूनियां मंडल और

निर्मोही खाकी दिगंबर एवं चारो अखाड़ों के संत उपस्थित रहे वहीं सभी प्रमुख संतों की उपस्थिति में कालाबड़ धाम के महंत श्री अवध बिहारी दास महाराज को इस धाम की महंताई की चादर ओढ़ाई गई वहीं इस अवसर पर दूदाराम कीर ने बताया कि विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें आस-पास के लगभग हजारों श्रद्धालु ने प्रसाद ग्रहण किया इस मौके पर एकदिवसीय विशाल मेला भी लगा वहीं शनिवार को विशाल भजन संध्या आयोजित हुई इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक गौतम ने महंत श्री अवधबिहारी दास महाराज को शॉल और माला पहनाकर स्वागत किया वहीं गौतम नाम ने भंडारे में तीन लाख रुपए की नकद राशि भेंट की इस दौरान हजारों की संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहें।

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की बैठक हुए सम्पन्न

न्यूज़ लाईन नेटवर्क रिपोर्ट आशुतोष त्रिपाठी सरवाड़

सरवाड़ शहर स्थित पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय की बैठक पर्यवेक्षक संजय वैष्णव अतिरिक्त जिला संगठन मंत्री तथा उपशाखा सरवाड़ के अध्यक्ष रामस्वरूप रैगर की अध्यक्षता में आयोजित की गई वहीं बैठक में निम्न बिंदुओं पर चर्चा की हुई जिसमें नवसंवत्सर पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सरवाड़ के चमन चौराहे व टांटोटी में मनाया जाएगा साथ ही नवसंवत्सर पर आयोजित कार्यक्रमों में संघ की उपस्थिति पर चर्चा की गई उक्त बैठक में नवसंवत्सर कार्यक्रम की सायंकाल में होने वाले उत्सव कार्यक्रम में शिक्षक संघ राष्ट्रीय शामिल होने का निर्णय किया गया।साथ ही सामाजिक समरसता दिवस अंबेडकर जयंती को धूमधाम से मनाया जाएगा इसमें विद्वान पुरुषों को बुलाकर सामाजिक समरसता दिवस पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाएगी इस दौरान बैठक में उपस्थित गोपीलाल कीर जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा नवसंवत्सर कार्यक्रम के बारे मे मार्गदर्शन किया वहीं बैठक में आथित्य के रूप में पधारे राजेन्द्र हेडा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एडवोकेट अजय पारीक मंत्री हनुमान शर्मा शिवप्रकाश पारीक महावीर प्रसाद गौड बृजेश आसोपा गोविंद लाल शर्मा राजेंद्र सिंह राव दशरथ बैरवा दीपेश सिसोदिया साहित अन्य उपशाखा सरवाड़ के समस्त कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे।

राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय उपशाखा केकड़ी के द्वारा नवसंवत्सर के पूर्व संध्या पर 29 मार्च को शहर में विशाल वाहन रैली निकाली जाएगी

न्यूज़ लाईन नेटवर्क रिपोर्ट केकड़ी खुशीराम गुर्जर

राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय उपशाखा केकड़ी की रविवार की बैठक श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केकड़ी में आयोजित हुई। बैठक के पर्यवेक्षक एवं संगठन के जिला संरक्षक गोविंदराम लौहार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, संगठन के जिला संरक्षक बिरदीचंद वैष्णव ने। विभाग के मंत्री संगठन सचिवालय सिंह सचिवालय एवं जिला संगठन मंत्री राजेंद्र सुजादिया विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आरंभ में सभी आगातुंक कलाकारों ने मां सरस्वती एवं संस्थापक जयदेव पाठक के चित्रों के समेकन द्वीप कर बैठक का लोकार्पण किया। बैठक में संकुल रचना, नवसंवत्सर, डॉ. भीमराव कामम जयंती, शिक्षक सेवानिवृत्ति सम्मान समारोह, समिति समिति सहित आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए संगीतकार और सहसंयोजक रचना रचना को जिम्मेदारी सौंपी गई।पर्यवेक्षक गोविंदराम लौहार ने हमारा विद्यालय हमारा तीर्थ विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। उपशाखा अध्यक्ष नवलकिशोर जांगिड़ ने आगामी कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि नवसंवत्सर की पूर्व संध्या पर 29 मार्च को शहर के मुख्य शुभारंभ पर विशाल वाहन रैली निकाली जाएगी। इसके बाद 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती को सामाजिक समरसता दिवस

के रूप में मनाकर 1 जुलाई 2024 से 30 जून 2025 तक की अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले केकड़ी क्षेत्र में कम्यूनिस्ट पार्टी का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा।अंतिम सत्र में सैटेलाइट के विभिन्न पहलुओं का संकलन कर सक्षम स्तर से उनके शीघ्र समाधान को लेकर चर्चा की गई। बैठक के दौरान डोकलाम में कंपोजिट ग्रांट, कैरियर डे, मिड डे माइल्स और एनुअल फेस्टिवल में अन्य कई पागलों में रशीज रिलीज नहीं हो रही है और कुक कम हेल्पर को पिछले चार महीने से अक्रिय मीटिंग में शामिल नहीं किया गया है। जिला उपसभापति मोजेन्द्रसिंह राव ने भारतीय नववर्ष पर गांव सापुंदा के ग्रामवासियों द्वारा अपने-अपने घर के बाहर रंगोली बनाने और कार्यक्रम में उत्साह बढ़ाने की जानकारी दी। जिला शारीरिक सदस्य मदन मोहन परेवा एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री रामबाबू गोल्डनकर ने एक और सुझाव दिया। बैठक का संचालन अधिकारी प्रदीप जैन ने किया। मंत्री भागचंद लाखारा ने की साझेदारी।बैठक के दौरान महिला मंत्री गोपाललाल रेगर, उपसभापति हीरालाल मीना, ईद मोहम्मद, हरिनारायण बीदा, रामसहाय मीना, डॉ. विष्णु प्रसाद वैष्णव, वीरेंद्र कुमार गोल्डनकार, अनुराग मथुर, महावीर मेघवंशी, रामनिवास कुमावत, चंद्रकांत कुमावत, सरोज कंवर नरूका, बृजकिशोर वैष्णव, रामप्रसाद कुम्हार, भगवत सिंह, धोबी और कई शिक्षक मौजूद रहे।

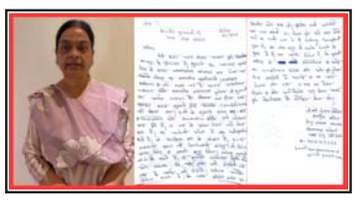

जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी आवास में करोड़ों की नगदी प्रकरण आंदोलन में राष्ट्रवाद भारत प्रथम का 24 मार्च को जंतर मंतर पर प्रदर्शन

हिन्दू महासभा ने किया राष्ट्रवाद का समर्थन - बी एन तिवारी

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय के जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी आवास में करोड़ों रुपए की नगदी बरामद होने पर न्याय व्यवस्था में भ्रष्टाचार को लेकर भारतीय जनमानस में आक्रोश पनप रहा है। इस प्रकरण को लेकर राष्ट्रवाद भारत प्रथम के राष्ट्रीय अध्यक्ष रितेश तोमर के नेतृत्व में 24 मार्च को जंतर मंतर पर प्रदर्शन किया जा रहा है। राष्ट्रीय संरक्षक डॉक्टर शैलेंद्र ठाकुर प्रदर्शनकारियों का मार्गदर्शन करेंगे। राष्ट्रवाद भारत प्रथम के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष रविन्द्र कुमार द्विवेदी ने कहा कि यह प्रदर्शन जस्टिस यशवंत वर्मा को बचाने का प्रयास करने के तहत उन्हें बर्खास्त करने के स्थान पर केवल उनका स्थानांतरण करने के विरोध में किया जा रहा है। प्रदर्शनकारी दोपहर एक बजे जंतर मंतर पर प्रदर्शन एकत्र होंगे और नारेबाजी करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के लिए प्रस्थान करेंगे। सर्वोच्च न्यायालय पर राष्ट्रवाद

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने किया समर्थन, राष्ट्रवाद प्रथम का जंतर मंतर पर प्रदर्शन

भारत प्रथम के शीर्ष पदाधिकारियों द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश की अपनी मांगों का ज्ञापन दिया जाएगा।प्रदेश अध्यक्ष रविन्द्र कुमार द्विवेदी ने कहा कि राष्ट्रवाद भारत प्रथम दिल्ली प्रदेश के कार्यकर्ता भारी संख्या में जंतर मंतर पर पहुंच रहे हैं। दूसरी तरफ अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता बी एन तिवारी ने राष्ट्रवाद भारत प्रथम के आंदोलन का समर्थन किया है। यह जानकारी बी एन तिवारी ने आज जारी बयान में दी।जारी बयान के अनुसार हिन्दू महासभा दिल्ली प्रदेश प्रभारी सुरेन्द्र स्वामी, प्रदेश अध्यक्ष विजेंद्र सिंह राजू पार्चा और प्रदेश महामंत्री शिवा गोस्वामी ने कहा कि न्यायपालिका को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने और उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया को पारदर्शी और प्रतियोगी परीक्षा पर आधारित बनाने के लिए राष्ट्रवाद द्वारा जंतर मंतर पर आयोजित हो रहे प्रदर्शन में शामिल होकर अपना योगदान देगी।

टांडा विधायक राममूर्ति वर्मा ने समाजवादी चिंतक राममनोहर लोहिया के चित्र पर मालार्पण कर किया नमन

न्यूज लाईन नेटवर्क

अम्बेडकरनगर। समाजवादी चिंतक प्रखर समाजवादी राम मनोहर लोहिया की जयंती पर टांडा विधायक राम मूर्ति वर्मा ने अकबरपुर स्थित लोहिया भवन में मालार्पण कर नमन किया। एवं ज़िला कार्यालय समाजवादी पार्टी पर विचार गोष्ठी एवं श्रद्धांजलि सभा में सपा ज़िला अध्यक्ष जंगबहादुर यादव सपा महासचिव मुजीब सोनूटांडा विधायक राम मूर्ति वर्मा विधायक त्रिभुवन दत्त पूर्व एम एल सी हीरालाल यादव विशाल वर्मा, मुसाब अजीम,रघुनाथ यादव, संदीप वर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष जलालपुर अंकुश पटेल, मोहम्मद सईम, अखिलेश यादव विधानसभा अध्यक्ष जलालपुर नेताओ और विधायक ने श्रद्धासुमन अर्पित किया जहां तमाम नेता कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री के निर्देशन में सिंगरौली पुलिस ने कॉम्बिंग गस्त के दौरान 258 बदमाशों पर की कार्यवाही

न्यूजलाइन नेटवर्क - चितरंगी संवाददाता - आदर्श तिवारी

चितरंगी/सिंगरौली। सिंगरौली पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री के निर्देशन में सिंगरौली पुलिस ने अपराध नियंत्रण के लिए एक बड़ी कार्रवाई की। इस दौरान पुलिस ने कॉम्बिंग गस्त अभियान चलाते हुए 258 बदमाशों पर कार्यवाही की। पुलिस ने 27 स्थाई वारंटियों, 95 गिरफ्तारी वारंटियों, 68 गुंडा बदमाशों और 68 निगरानी बदमाशों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की। इस अभियान के तहत पुलिस ने अपराधियों पर शिकंजा कसते हुए उनकी गिरफ्तारी के लिए व्यापक स्तर पर सर्च ऑपरेशन चलाया। पुलिस विभाग के अधिकारियों ने इस कार्यवाही को सख्त और प्रभावी बताते हुए बताया कि क्षेत्र में अपराध पर नियंत्रण के लिए यह कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। पुलिस विभाग के अधिकारियों ने क्षेत्रीय जनता से भी अपील की है कि वे अपराधियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई में सहयोग करें और सुरक्षित वातावरण बनाने में मदद करें। पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई में शामिल प्रमुख व्यक्तिः- पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री, सिंगरौली पुलिस टीम।

पार्षद प्रेमसागर मिश्रा ने 47 गरीब परिवारों को मुफ्त नल जल कनेक्शन देने के लिए नगर निगम में 47 हजार रुपए जमा किए

न्यूजलाइन नेटवर्क - चितरंगी संवाददाता - आदर्श तिवारी

चितरंगी/सिंगरौली। सिंगरौली नगर निगम वार्ड क्रमांक 36 के पार्षद प्रेमसागर मिश्रा ने 47 बीपीएल (ॉत्दै इदनेूब थ्हा) परिवारों को मुफ्त नल जल कनेक्शन प्रदान करने के लिए नगर निगम में स्वयं 47 हजार रुपए का चेक जमा किया है। इसके बाद, आज 47 परिवारों को पाउती दी गई। पार्षद मिश्रा ने बताया कि एक सप्ताह के भीतर इन 47 परिवारों के घरों में नल जल कनेक्शन स्थापित कर दिए जाएंगे।इस अवसर पर, वार्ड 36 के पार्षद कार्यालय में एनटीपीसी विंध्याचल के सहयोग से सैकड़ों लोगों को मच्छरदानी का वितरण भी किया गया। प्रेमसागर मिश्रा ने बताया कि वे लगातार अपने वार्ड के विकास के लिए काम कर रहे हैं, जिसमें रोड, बिजली, पानी और तालाबों जैसी मूलभूत समस्याओं का समाधान शामिल है। पार्षद प्रेमसागर मिश्रा के कार्यों की व्यापक सराहना हो रही है, और सिंगरौली वेे अन्य जनप्रतिनिधियों से उनके नेतृत्व और जनता के बीच लोकप्रियता को लेकर सीखने की अपील की जा रही है।इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से वार्ड-36 के पार्षद प्रेमसागर मिश्रा, वार्ड-38 के पार्षद अनिल कुमार वैश्य, राजेन्द्र दुबे, महेश प्रसाद पाण्डेय, मणीराज सिंह, धर्मेन्द्र सिंह सहित सैकड़ों लोग और महिलाएं उपस्थित थीं। कार्यक्रम में प्रमुख लोगः- वार्ड-36 के पार्षद प्रेमसागर मिश्रा, वार्ड-38 के पार्षद अनिल कुमार वैश्य, राजेन्द्र दुबे, महेश प्रसाद पाण्डेय, मणीराज सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, आर0बी0 शाह, परमात्मा प्रजापति, और अन्य वार्डवासी। यह आयोजन वार्ड के विकास में पार्षद प्रेमसागर मिश्रा द्वारा किए गए उल्लेखनीय प्रयासों को दर्शाता है।

एटा में तैनात सिपाही की पत्नी की सड़क दुर्घटना में मौत, पुत्र की हालत गंभीर

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

मैनपुरी,विछवा। थाना क्षेत्र के गांव करीमगंज के समीप ट्रक की टक्कर से एक कार क्षतिग्रस्त हो गई। उसमें सवार दो लोग घायल हो गये। इलाज के दौरान एक महिला की मौत हो गई। मामले की तहरीर पुलिस को दी है। इटावा के थाना सैफई क्षेत्र के गांव हरनाथ निवासी जागेश्वर सिंह पुत्र बैजनाथ ने तहरीर देते हुए बताया कि वह 16 तारीख को छुट्टी लेकर वर्तमान में मुख्य आरक्षी पद एटा में तैनात है। वहां से अपनी पत्नी रीमा यादव उम्र 37 वर्ष के साथ अपने पुत्र उदय 15वर्ष अक्षय 13 वर्ष के साथ अपने गांव जा रहा था। बिछवा थाना क्षेत्र में करीमगंज के समीप एक ट्रक चालक ने तेजी व लापरवाही से टक्कर मार दी। जिसमें उसकी पत्नी व पुत्र उदय गंभीर रूप से घायल हो गया। घायलों को इलाज हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया ।जहां से सैफई रेफर कर दिया गया। इलाज के दौरान रीमा यादव की मौत हो गई ।जबकि उदय गंभीर रूप से घायल है उसका इलाज चल रहा है मामले की तहरीर पुलिस को दी गई है।

दर्जनों ऑटो चालकों ने किया प्रदर्शन

परमिट के अनुसार 16 किलोमीटर तक ऑटो चलने की मांग की

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

मैनपुरी। एलाऊ - रविवार को कुसमरा रोड स्थित एलाऊ थाने पर दर्जनों ऑटो चालकों ने अपने-अपने ऑटो खड़े कर प्रदर्शन किया। उन्होंने शिकायती पत्र देते हुए बताया हम सभी लोग ऑटो चलाकर अपने घरों का भरण पोषण करते हैं तथा बची हुई शेष राशि का लोन अदा करते हैं। कुसमरा रोड पर अगर कोई ऑटो चालक अगर सवारी लेकर चला जाता है तों बस वाले ऑटो चालकों के साथ मारपीट करते है। साथ ही सवारियां उतार कर गाली गलौज करते हैं। दो ऑटो चालकों के साथ मारपीट की और शीशा फोड़ दिया। ऑटो वालों ने एआरटीओं मैनपुरी पर आरोप लगाते हुए कहा बस वाले पैसे देकर ऑटो वालों के चालान कटवाते है। कागज सभी पूरे होने के बाद भी एआरटीओं हम लोगों के चालान काटते है। जबकि कई बसों के कागज अधूरे है। उन पर कोई कार्यवाही नहीं की जाती हम लोग अपने बच्चे कैसे पाले कहा जाए। अगर हमारी मांग पूरी नहीं की जाती तों हम सभी हड़ताल और धरना प्रदर्शन करने पर मजबूरी होंगे। अगर फिर भी हमारी सुनवाई नहीं हुई तों हम सभी लखनऊ जाकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिकायत करेंगे। ऑटो चालकों ने जिलाधिकारी से मांग की है, हम सभी लोगों के ऑटो परमिट के अनुसार 16 किलोमीटर तक चलाने दिए जाए। मांग करने वालों में संतोष, बृजेश कुमार, ऋषि, अंकुश, शिवकुमार, महाराज सिंह, राजवीर, शैलेंद्र, मोनू, आकाश, चंद्र मोहन आदि दर्जनों ऑटो चालक मौजूद थे।

तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार को मारी टक्कर मौके पर हुई युवक की दर्दनाक मौत

सड़क दुर्घटना उस समय हुई जब युवक अपनी बहन को करहल छोड़ने जा रहा था

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

मैनपुरी करहल थाना क्षेत्र में तेज रफ्तार डंपर ने एक बाइक सवार युवक को उस समय रौंद डाला जब वह अपनी बहन को कस्बा करहल छोड़ने जा रहा था। इस सड़क हादसे में युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के अनुसार फिरोजाबाद निवासी शादाब अपनी बहन को बाइक पर बैठाकर करहल जा रहा था जैसे वह गांव चंद्रपुर के समीप पहुंचा उसी समय एक तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी। इस सड़क हादसे में युवक की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना की जानकारी होते ही आस पास के लोगों की भीड़ जमा हो गई और सूचना पुलिस को दी गई तो पुलिस मौके पर पहुंच गई और शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्मार्टम के लिए भेज दिया। घटना की जानकारी होते ही परिजन पहुंच गए और जैसे ही शव परिजनों ने देखा चीख पुकार मच गई। परिवार में हुई युवक की आकस्मिक मौत से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

मैनपुरी में दलित किशोरी के साथ आरोपी ने किया दुष्कर्म पीड़िता की मां ने पुलिस में कराई शिकायत दर्ज

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

मैनपुरी।कुरावली थाना क्षेत्र में दलित किशोरी के साथ आरोपी ने दुष्कर्म किया और किशोरी को अगवा करनी की कोशिश की मामले की शिकायत किशोरी की मां ने पुलिस में दर्ज कराई है। मामला कुरावली थाना क्षेत्र से ताल्लुक रखता है। किशोरी की मां ने आरोपी फैजान पुत्र मोहम्मदीन के खिलाफ पुलिस को शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि वह पूड़ी बेलने का काम करती हैं। 11 मार्च की रात 9 बजे उनकी बेटी कुछ सामान लेकर घर लौट रही थी। इसी दौरान आरोपी ने उसे जबरन पकड़कर एक सूने मकान में ले गया और दुष्कर्म किया। घटना के बाद 19 मार्च तक गांव में पंचायत चलती रही। 20 मार्च वह अपने एक दोस्त के साथ घर पहुंचा। उसने परिवार को जातिसूचक गालियां दीं और मारपीट की। आरोपी किशोरी को जबरन ले जाने लगा, लेकिन शोर सुनकर भीड़ जमा हो गई। इसके बाद वह धमकी देकर फरार हो गया। कुरावली पुलिस महिला की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया और फरार आरोप की तलाश शुरू कर दी है। प्रभारी धर्मेंद्र चौहान ने बताया कि इस मामले में मुकद्दमा दर्ज कर लिया गया ओर जल्द आरोपी की गिरफ्तारी कर जेल भेजा जाएगा।

सी एस ए यूनिवर्सिटी कानपुर के कुलपति ने राज्यपाल के आदेश को किया दरकिनार

सैलरी और आवास के अभाव में दर दर भटक रही डॉ नीलिमा कुंवर कर्ज लेकर कर रही है जीवन यापन

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा

कानपुर में ण्ैं यूनिवर्सिटी के कुलपति आनंद कुमार सिंह जी ने राज्यपाल महोदय के आदेश को भी चुनौती दे दी शिकायतकर्ता डाक्टर नीलिमा कुंवर जी ने बताया कि राज्यपाल महोदय ने वेतन और आवास सम्बंधित आदेश कुलपति महोदय को दिए थे कुलपति आनंद कुमार सिंह उन आदेशों को भी कुछ नहीं समझ रहे हैं मैं काफी लंबे समय से परेशान चल रही हूं मेरी सैलरी और आवास का अभी तक आदेश पर कुलपति आनंद कुमार साइन नहीं कर रहे हैं जब मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने गई तो गलत शब्दों का प्रयोग करने लगें मैं काफी लंबे अरसे से मैं अपने बच्चों की फीस भी नहीं भर पा रही हूं कर्ज लेकर अपना जीवन यापन कर रही हूं पर कुलपति आनंद कुमार सिंह मेरे पेपर पर साइन नहीं कर रहे हैं, जबकि राजपाल महोदय जी भी आदेश दे चुकी है, मैं शासन, प्रशासन, मीडिया, वा सभी संगठनों से प्रार्थना करती हूं कि मुझे इंसाफ दिलाया जाए जो मैंने शिक्षा के बदौलत ईमानदारी से पाया है उसे अपना जीवन ढंग से यापन कर सकूं।

गंगा स्वच्छता पखवाड़ा 2025 ग्रामवासी नदी को स्वच्छ रखने में सहयोग करें-जिला पंचायत राज अधिकारी

स्टेट हेड मनोज कुमार शर्मा मैनपुरी

गंगा स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के दूसरे दिन अन्तर्गत जिले के पुसैना ग्राम में ईशन नदी को प्लास्टिक मुक्त करने का अभियान चलाया गया। ईशन नदी के किनारे झाड़ियों को काटने का काम भी किया गया। जिला पंचायत राज अधिकारी डॉ अवधेश सिंह ने कहा कि ग्रामवासी स्वच्छता के प्रति जागरूक हों। गांव में खुले में शौच प्रथा समाप्त हो। प्रधान और सचिव लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें। सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को हतोत्साहित किया जाए। उन्होंने पुसैना गाँव मे स्वच्छता के प्रति लोगों के कम

जागरूक होने पर साप्ताहिक बैठक करने के निर्देश सचिव मोहनलाल को दिए। उन्होंने ग्रामवासियों को बताया कि एकल उपयोग प्लास्टिक के इस्तेमाल से पर्यावरण को बहुत नुकसान होता है। इसके प्रदूषण वन्य जीवों को खतरा और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें आती हैं। जानवर प्लास्टिक को भोजन समझकर खा लेते हैं या उसमें फंस जाते हैं जिससे उनकी जान को खतरा हो जाता है। प्लास्टिक के छोटे टुकड़े पानी और भोजन में मिल जाता हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। जिलाधिकारी के निर्देश पर ईशन नदी के किनारे स्थित ग्रामों में सफाई अभियान चलाने का रोस्टर जारी किया गया है। इस मौके पर डीपीसी नीरज शर्मा ने कहा कि ग्रामवासी नदी के किनारे कूड़ा न डालें,ग्रामपंचायत द्वारा खाद गड्ढों का निर्माण कराया गया है।मनरेगा योजना से भी खाद गड्ढे बनवाये जा रहे है। रोजगार सेवक मनरेगा योजना से लोगों के खाद गड्ढे बनवाएं।ग्राम पंचायत में कूड़ा संग्रहण केंद्र निर्मित है। ग्राम पंचायत घर-घर से कूड़ा संग्रहण का काम शुरू करे। इस मौके पर डीपीसी नीरज शर्मा, डीसी राजकुमार राजपूत, डीसी फराज अहमद, शैलेन्द्र शर्मा प्रभारी सफाई कर्मचारी, सचिव, मोहन लाल, अमित कुलश्रेष्ठ,रामराज ग्रामवासियों ने उपस्थित होकर साफ-सफाई कार्य में प्रतिभाग किया।

मन से हो जाएं मुक्त

इस दुनिया के किसी भी व्यक्ति या वस्तु से पीछा छुड़ाने की हमें कोई जरूरत नहीं हैं, हमें सिर्फ अपने मन से मुक्त होने की जरूरत है। जैसे ही आप अपने मन से मुक्त हो जाते हैं, चैतन्यस्वरूप परमात्मा का प्रकाश आपके जीवन के भर देता है।

मैं आपके हाथ जीवनभर सुखी रहने की चाबी थमा देती हूं, अगर आप उसे ठीक से संभाल सको, तो कृपया संभाल लेना। चाबी यही है कि जब-जब आपका मन ठहर जाएगा, वहीं पर आपको सच्चा सुख और आनंद मनाने का मौका मिलता है। और जब भी आपका मन अस्थिर रहेगा, आपको दुख, तनाव और चिंताएं घेर लेती हैं। तब आप उन चीजों की तलाश में दर-दर भटकते फिरते हैं, जिन चीजों से आपको लगता है कि सुख मिलेगा। जब आपको अपनी मनचाही चीज मिल जाती है, तब अचानक थोड़ी देर के लिए आपका मन ठहर जाता है। जैसे ही आपका मन ठहर जाता है, आप अपने ही आनंद में मग्न हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद वह चीज तो वहीं पर पड़ी रह जाती है, और आपका मन सुख की तलाश में किसी और चीज की तरफ आकर्षित हो जाता है। पर जब आपको थोड़ी देर सुख मिला था, वह इसलिए कि आपका मन उस समय ठहर गया था।

हर क्षण जब आपका मन ठहर जाता है, आप अपने ही भीतर सुख का अनुभव करते हैं। इस मन को ठहराने का तरीका है आपकी श्वसन क्रिया में। जैसे ही आप अपनी श्वसन क्रिया को शांत करते हैं, आपका मन ठहरने लगता है और जब भी मन ठहर जाता है, आप स्वत- सुख का अनुभव करते हो। बाह्य जगत में हमें सुख पाने के लिए वस्तुओं और व्यक्तियों का गुलाम बनना पड़ता है। लेकिन अपने श्वासों को शांत करके अपने ही भीतर मिलने वाले असीम आनंद को पाने में हम अत्यंत स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं।

– आनंदमूर्ति गुरुमां

श्वासों को शांत करने से वहीं और उसी क्षण जैसे ही आपका मन ठहर जाता है, आपका सुख आपको तुरंत मिल जाता है। उसके लिए इस दुनिया के किसी भी व्यक्ति या वस्तु से पीछा छुड़ाने की हमें कोई जरूरत नहीं है, हमें सिर्फ अपने मन से मुक्त होने की जरूरत है। जैसे ही आप अपने मन से मुक्त हो जाते हैं, चैतन्यस्वरूप परमात्मा का प्रकाश आपके जीवन को भर देता है। पर अपने ही भीतर के इस चैतन्य के प्रकाश को आप कैसे देख पाएंगे? सच तो यह है कि जैसे ही आप अपने भीतर उसे देखने में कामयाब हो जाएंगे, जल्दी ही आप बाहर भी उसे देखने लग जाएंगे। लेकिन ज्ञान के बिना आप इस प्रकाश को नहीं देख सकेंगे। प्रश्न यह उठता है कि अगर परमात्मा मेरे ही हृदय में विराजमान हैं, तो उसके लिए मैं क्यों प्यासा हूं? इस मन के अधिष्ठान में परमात्मा ही है, परमात्मा ही आपके मन का सर्वस्व है। फिर भी आपका मन उसके लिये तड़पता है।

कबीर कहते हैं, 'जल विच मीन पियासी, मोहे देखत आवे हासी' यानी पानी में रह कर भी मछली पानी के बिना प्यासी है। आपके मन का अधिष्ठाता परमात्मा है। आप परमात्मा में ही रहते हैं, फिर भी आप परमात्मा से वंचित रहते हैं, दुखी होते हैं और अपने आपको हजार चीजों में उलझाये रखते हैं। जब आपका मन ठहर जाता है, उसी क्षण उस प्यारे के प्रेम की बरसात आपके दिल में होने लगती है। मन को श्वसन क्रिया की अलग-अलग विधियों द्वारा ठहराया जा सकता है, जिससे आपके हृदय के उपवन में परमात्मा के असीम प्रेम की बरसात होने लगती है। अपने आसपास की ध्वनियों को सुनें, उन्हें आत्मसात करें, अपने श्वास में पिरोएं। आपके अंदर जब प्रेम भरने लगेगा, आप खुद अपने आपको मुक्त पाएंगे। परमात्मा के साथ अपना एकाकार करने के लिए बस आपको अपने अंदर की ध्वनि सुननी होगी, अपने श्वासों के माध्यम से। आप दुख और सुख में एकलीन हो जाएं। कुछ समय बाद आप ना दुख को महसूस करेंगे ना सुख को। बल्कि चौबीसों घंटे एक अलग दुनिया में विचरण करेंगे। इस स्थिति तक पहुंचने के लिए योगी, साधू और तपस्वी ना जाने क्या-क्या जतन करते हैं।

परमात्मा को क्या चाहिए? यह सवाल अपने आप से भी जानिए कि आपको क्या चाहिए? जल आपके पास है, वायु आपके पास है, धरती आपके समीप है। इससे अधिक क्या? मोह की मुक्ति की शुरुआत अपने भीतर से करिए। श्वास को आते-जाते महसूस कीजिए और कल्पना कीजिए कि आप मुक्त हो रहे हैं दुखों से, छल-कपट और निष्ठुरता से। यही है सुख की चाबी। दुखों से मुक्ति सुख नहीं है। मुक्ति को पाना और समीप से महसूस करना ही असली सुख है।

जब देवताओं ने ली हनुमानजी के बल और बुद्धि की परीक्षा

हनुमानजी को आकाश में बिना विश्राम लिये लगातार उड़ते देखकर समुद्र ने सोचा कि ये प्रभु श्रीरामचंद्रजी का कार्य पूरा करने के लिए जा रहे हैं। किसी प्रकार थोड़ी देर के लिये विश्राम दिलाकर इनकी थकान दूर करनी चाहिए। उसने अपने जल के भीतर रहने वाले मैनाक पर्वत से कहा, मैनाक! तुम थोड़ी देर के लिये ऊपर उठकर अपनी चोटी पर हनुमानजी को बिठाकर उनकी थकान दूर करो। समुद्र का आदेश पाकर मैनाक प्रसन्न होकर हनुमानजी को विश्राम देने के लिये तुरंत उनके पास आ पहुंचा। उसने उनसे अपनी सुंदर चोटी पर विश्राम के लिये निवेदन किया। उसकी बातें सुनकर हनुमानजी ने कहा, मैनाक! तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन भगवान श्रीरामचंद्रजी का कार्य पूरा किये बिना मेरे लिये विश्राम करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसा कहकर उन्होंने मैनाक को हाथ से छूकर प्रणाम किया और आगे चल दिये।

हनुमानजी को लंका की ओर प्रस्थान करते देखकर देवताओं ने सोचा कि ये रावण जैसे बलवान राक्षस की नगरी में जा रहे हैं। इनके बल बुद्धि की विशेष परीक्षा कर लेना इस समय आवश्यक है। यह सोचकर उन्होंने नागों की माता सुरसा से कहा, 'देवी सुरसा! तुम हनुमान के बल बुद्धि की परीक्षा लो। देवताओं की बात सुनकर तुरंत सुरसा एक राक्षसी का रूप धारण कर हनुमानजी के सामने जा पहुंची। उसने उनका मार्ग रोकते हुए कहा, वानरवीर! देवताओं ने आज मुझे तुमको अपना आहार बनाने के लिये भेजा है।

उसकी बातें सुनकर हनुमानजी ने कहा, माता! इस समय मैं प्रभु श्रीरामंचद्रजी के कार्य से जा रहा हूं। उनका कार्य पूरा करके मुझे लौट आने दो। उसके बाद मैं स्वयं ही आकर तुम्हारे मुंह में प्रविष्ट हो जाउंगा। इस समय तुम मुझे मत रोको, यह तुमसे मेरी प्रार्थना है। इस प्रकार हनुमानजी ने सुरसा से बहुत प्रार्थना की, लेकिन वह किसी प्रकार भी उन्हें जाने नहीं दे रही थी। अंत में हनुमान जी ने क्रुद्ध होकर कहा, 'अच्छा तो लो तुम मुझे अपना आहार बनाओ। उनके ऐसा कहते ही सुरसा अपना मुंह सोलह योजन तक फैलाकर उनकी ओर बढ़ी। हनुमानजी ने तुरंत अपना आकार उसका दूना अर्थात् 32 योजन तक बढ़ा लिया।

इस प्रकार जैसे जैसे वह अपने मुख का आकार बढ़ाती गयी, हनुमानजी अपने शरीर का आकार उसका दूना करते गये। अंत में उसने अपना मुंह फैलाकर 100 योजन तक चौड़ा कर लिया। तब हनुमानजी तुरंत अत्यंत छोटा रूप धारण करके उसे उस 100 योजन चौड़े मुंह में घुसकर तुरंत बाहर निकल आये। उन्होंने आकाश में खड़े होकर सुरसा से कहा, माता! देवताओं ने तुम्हें जिस कार्य के लिए भेजा था, वह पूरा हो गया है। अब मैं भगवान श्रीरामंचद्रजी के कार्य के लिए अपनी यात्रा पुनः आगे बढ़ाता हूं। सुरसा ने तब उनके सामने अपने असली रूप में प्रकट होकर कहा, महावीर हनुमान! देवताओं ने मुझे तुम्हारे बल बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए यहां भेजा था। तुम्हारे बल बुद्धि की समानता करने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं है। तुम शीघ्र ही भगवान श्रीरामचंद्रजी के सारे कार्य पूर्ण करोगे। इसमें कोई संदेह नहीं है। ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

गाय रखकर कर सकते हैं वास्तु दोषों का निवारण

गाय का भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है। यह सदा से भारतीय जन-जीवन की धुरी रही है। प्राचीन काल में हमारे देश में सर्वाधिक सम्पन्नता के स्तर का मापक गाय ही हुआ करती थी। देशी-विदेशी चिकित्सा प्रणालियों में गाय की बड़ी महिमा है। पुराणों के अनुसार गाय में तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का निवास है। गाय को भी देवता के समान माना गया है। गर्ग संहिता के अनुसार नौ लाख गाय रखने वाले को नंद, पांच लाख गायों के मालिक को उपनंद। दस लाख गाय वला 'वृषभानु' एंव एक करोड़ गायों को पालक को 'नंदराज' कहा जाता था। श्रीकृष्ण का नाम आते ही उनके चारों ओर गाय-बछड़ों एवं गोप-ग्वालों का चित्र हमारे मानस पटल पर आ जाता है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार गायों की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

– गोदुग्ध पीने से हमें सतत शक्ति एवं स्फूर्ति मिलती है। गोमूत्र सेवन से शरीर रोगमुक्त होता है।

– जिस स्थान पर भवन या घर का निर्माण करना हो तो यदि वहां बछड़े वाली गाय को बांधा जाए तो वहां वास्तु दोषों का निवारण हो जाता है। कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएं नहीं आती।

– ज्योतिष में गोधूली का समय विवाह के लिए सर्वोतम माना गया है। जब गायें जंगल से चरकर वापस घर आती है उस समय को गोधूली वेला कहते हैं।

– यात्रा के समय गाय सामने पड़ जाए तो यात्रा सफल होती है।

– किसी भी जन्मपत्री में सूर्य नीच राशि तुला पर हो या अशुभ स्थिति में हो अथवा केतु द्वारा परेशानियां आ रही हो तो गाय की पूजा करनी चाहिए, दोष समाप्त होंगे।

– विष्णु पुराण में कहा गया है जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गये तो नन्द दम्पनी ने गाय की पूंछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भय का निवारण किया।

– संतान लाभ के लिए गाय की सेवा का अच्छा उपाय कहा गया है। शिवपुराण के अनुसार गाय की सेवा करने वालों को यम का भय नहीं रहता।

– आयुर्वेद में गाय के घी को आयु कहा गया है। गाय का घी सेवन करने वाला व्यक्ति दीर्घायु होता है।

– गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड होता है जो कीटानाशक है और शुद्धता बढ़ाता है। इसमें स्वर्णक्षर मौजूद रहता है जो अति उपयोगी रसायन है।

– गाय भारतीय कृषि का आधार है। बिगड़ी भूमि को सुधारने एवं उर्वराशक्ति को बढ़ाने के लिए गोबर का उपयोग हजारों वर्षों से खेती के लिए किया जा रहा है।

– गोमूत्र में सोलह प्रकार के खनिज तत्व होते हैं जो शरीर के रक्षण, पोषण और विकास में सहायक है। इसके समुचित सेवन से रोग-रोधक शक्ति बढ़ती है। शरीर शक्तिशाली एवं चेतनायुक्त होता है।

– गाय के सींगों का बनावट पिरामिड जैसा होता है। वह एक शक्तिशाली एंटीना के रूप में कार्य करती ह। सींगों की मदद से गाय आकाशीय ऊर्जाओं को शरीर में संचित कर लेती है। वहीं ऊर्जा हमें गोमूत्र,

दूध ओर गोबर द्वारा मिलता है।

गाय के दूध में कैरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। भैंस का दूध गर्म करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं। जबकि गाय का दूध गर्म करने का भी वैसे ही पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं।

– देशी गाय पूर्णतय शाकाहारी पशु है जबकि जरसी गाय मांसाहारी जंगली पशु है। जरसी गाय के भोजन में मांस का टुकड़ा मिला दिया जाए तो बड़े चाव से खा जाती है।

– धार्मिक मान्यता के अनुसार भारतीय गोवंश का उद्गम जंगल से नहीं बल्कि समुद्र मंथन से प्राप्त गोमाताओं से है। वैज्ञानिकों का कहना है कि भारतीय गोवंश का मूल स्रोत 'औरक्तस' नामक पशु है जिसने 18 लाख वर्ष पूर्व भारत में जन्म लिया था।

– क्रासबीडिंग करना अथवा विदेशी गायों की ओर देखना छोड़कर हमें अपनी भारतीय नस्ल की गायों को उचित महत्व देना चाहिए।

– गौमाता की कृपा से गोभक्तों का आगामी वंश भी संस्कारवान होता है। गोसेवा करने वाला निश्चिंत रहता है। किसी ने ठीक लिखा है-

जा घर होय तुलसी अरू गाय।
ता धर वैद्य कबहुं नहीं जाए।।

मात्र 11 दिन में खुशी से झोली भर देंगे गणेशजी के यह 3 मंत्र

गणेशजी के यह 3 विलक्षण अमोघ मंत्र

भगवान श्री गणेश अप ने हर रूप में प्रसन्नता और खुशियों का वरदान देते हैं। उनकी हर आराधना फलदायक होती है। वह सौभाग्य और मंगल के प्रदाता हैं। आइए जानते हैं उनके 3 ऐसे चमत्कारी मंत्र जो विधिवत करने पर मात्र 11 दिन में जीवन बदल देने की क्षमता रखते हैं।

मंत्र 1 : गणेश गायत्री मंत्र

ऊँ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि तन्नो बुद्धि प्रचोदयात।।

यह गणेश गायत्री मंत्र है। इस मंत्र का 11 दिन शांत मन से 108 बार जप करने से गणेशजी की विशिष्ट कृपा होती है। गणेश गायत्री मंत्र के जप से व्यक्ति का भाग्य चमक जाता है और हर कार्य अनुकूल सिद्ध होने लगता है।

मंत्र 2 : तांत्रिक गणेश मंत्र

ऊँ ग्लौम गौरी पुत्र, वक्रतुंड, गणपति गुरू गणेश।
ग्लौम गणपति, ऋद्धि पति, सिद्धि पति। करों दूर क्लेश।।

11 दिन तक इस मंत्र का 108 बार जाप करने व्यक्ति के जीवन के सारे क्लेश समाप्त होते हैं। धन, धान्य, संपत्ति, समृद्धि, खुशियां, वैभव, पराक्रम, विद्या और शांति की प्राप्ति होती है। लेकिन इस मंत्र के प्रयोग के समय व्यक्ति को पूर्ण सात्विकता रखनी होती है और क्रोध, मांस, मदिरा, परस्त्री संबंधों से दूर रहना होता है।

मंत्र 3 : गणेश कुबेर मंत्र

ऊँ नमो गणपतये कुबेर येकद्रिको फट् स्वाहा।

यह मंत्र अपार लक्ष्मी देने वाला है। गणेशजी की पूजा करने के बाद गणेश कुबेर मंत्र का 11 दिन तक नियमित रूप से जाप करने से व्यक्ति को धन के नवीन स्त्रोत मिलना आरंभ होते हैं। जीवन में खुशियां दस्तक देने लगती है।

वेद, विज्ञान और पुराणों से जानिए शंख की महिमा

ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लेख मिलता है कि 'शंख' चंद्रमा और सूर्य के समान ही देव हैं। शंख के मध्य में वरुण, पीछे के भाग में ब्रह्मा और आगे के भाग में गंगा और सरस्वती का निवास है।

शंख निधि (धन का खजाना) का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि इस मंगलचिह्न को घर के पूजास्थल में रखने से अनिष्टों का नाश होता है और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

शंख का महत्व जितना धार्मिक है उतना ही वैज्ञानिक, वैज्ञानिकों का मानना है कि शंख-ध्वनि के प्रभाव में सूर्य की किरणें बाधक होती हैं। इससे आसपास का वातावरण तता पर्यावरण शुद्ध रहता है।

आयुर्वेद के अनुसार शंखोदक भस्म से पेट की बीमारियों अमूमन पीलिया, यकृत के रोग, पथरी आदि रोग ठीक होते हैं।

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि मूक एवं श्वास रोगी हमेशा शंख बजायें तो बोलने की शक्ति पा सकते हैं। ऋषि श्रृंग की मान्यता है कि छोटे-छोटे बच्चों के शरीर पर छोटे-छोटे शंख बांधने तथा शंख में जल भरकर अभिमंत्रित करके पिलाने से वाणी-दोष नहीं रहता है।

यजुर्वेद में कहा गया है कि 'यस्तु शंखध्वनि कुर्यात्पूजाकाले विशेषतः, वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते' यानी पूजा के समय जो व्यक्ति शंख-ध्वनि करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वह भगवान विष्णु का आशीर्वाद पाता है।

मुगल काल के मशहूर संगीतज्ञ तानसेन ने अपने आरंभिक दौर में शंख बजाकर ही गायन शक्ति प्राप्त की थी। अथर्ववेद के चतुर्थ अध्याय में शंखमणि सूक्त में शंख की महिमा का वर्णन मिलता है। अथर्ववेद के अनुसार, शंख से राक्षसों का नाश होता है। भागवत पुराण में भी शंख का विस्तृत उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद के अनुसार युद्ध में शत्रुओं का दिल दहलाने के लिए शंख फूकने का वर्णन मिलता है।

गोरक्षा संहिता, विश्वामित्र संहिता, पुलस्त्य संहिता आदि ग्रंथों में दक्षिणावर्ती शंख को आयुर्वद्धक और समृद्धि दायक कहा गया है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, पूजा के समय शंख में जल भरकर देवस्थान में रखने और उस जल से पूजन सामग्री धोने और घर के आस-पास छिड़कने से वातावरण शुद्ध रहता है।

विष्णु पुराण के अनुसार माता लक्ष्मी समुद्र राज की पुत्री हैं तथा शंख की उत्पत्ति भी समुद्र से हुई है, इसलिए शंख उनके भाई है। मान्यता है कि जहां शंख है, वहीं लक्ष्मी जी का वास होता है।

ठग सुकेश को घड़ी पहनने की सलाह देना पड़ा महंगा, रिटायरमेंट के दिन ही आरएमओ सस्पेंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की मंडोली जेल में बंद कुख्यात ठग सुकेश चंद्रशेखर को कथित तौर पर घड़ी पहनने की सलाह देना जेल के रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर (आरएमओ) को काफी महंगा पड़ गया। इस मामले में आरएमओ को उनकी रिटायरमेंट वाले दिन ही सस्पेंड कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक मंडोली जेल के आरएमओ को सस्पेंड कर दिया है। जेल के एक अधिकारी ने बताया कि आरएमओ ने जेल में बंद कुख्यात ठग सुकेश चंद्रशेखर को कलाई की घड़ी पहनने की डॉक्टरी सलाह दी थी। आरएमओ की ओर से इस मामले में जेल के संबंधित उच्च अधिकारी को कोई सूचना नहीं दी गई। अधिकारी की अनुमति के बिना कलाई घड़ी की डॉक्टरी सलाह का मामला संज्ञान में आने के बाद जेल प्रशासन द्वारा आरएमओ आर राठी के खिलाफ जांच शुरू की गई और उसके बाद गत 28 फरवरी को उन्हें सस्पेंड कर दिया। उसी दिन आरएमओ की रिटायरमेंट का भी दिन था। जेल अधिकारी फिलहाल इस बात की जांच कर रहे हैं कि आरएमओ ने आखिर किस कारण से सुकेश को कलाई घड़ी पहनने की सलाह दी थी। बता दें इससे पहले दिल्ली की निचली अदालत के निर्देश पर सुरक्षा जांच के साथ जेल अधिकारियों ने सुकेश को कलाई घड़ी दी थी, लेकिन बाद में आदेश के खिलाफ जेल अधिकारियों की ओर से दिल्ली हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई थी, जिसमें ट्रायल कोर्ट द्वारा जारी उक्त फैसले को चुनौती दी गई थी। याचिका में सुरक्षा कारणों के चलते हाईकोर्ट से यह अपील की गई थी कि निचली अदालत के आदेश को खारिज कर दिया जाए।

अयोध्या से नागपुर जा रही बस जबलपुर में पलटी, 3 की मौत, 25 घायल

जबलपुर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में रविवार को एक यात्री बस अनियंत्रित होकर पलट गई। इसमें तीन लोगों की मौत हो गई और 25 घायल हो गए। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह हादसा रमनपुर घाटी में हुआ। बस यात्रियों को लेकर अयोध्या से नागपुर जा रही थी। सुबह करीब 4.45 बजे रमनपुर घाटी के पास बस अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस की मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाया। वहीं, तीनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। बता दें कि इससे पहले 13 मार्च को मध्य प्रदेश के ही धार जिले के बदनावर-उज्जैन फोरलेन पर सड़क दुर्घटना में कई लोगों की मौत हो गई थी और तीन गंभीर रूप से घायल हो गए थे। पुलिस ने छह लोगों की मौत की पुष्टि की थी। रिपोर्ट के मुताबिक मृतक सीतामऊ थाना क्षेत्र के मंदसौर के निवासी थे। वे इंदौर से मंदसौर जा रहे थे। पुलिस ने बताया था कि पिकअप में सवार एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई थी। वहीं, कार में सवार चार में से तीन लोगों की मौके पर मौत हो गई थी और एक घायल व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बदनावर पुलिस थाना प्रभारी ने बताया था कि टैंकर गलत दिशा में जा रहा था। उसने पहले एक पिकअप वाहन को टक्कर मारी और फिर उसके पीछे आ रही कार को टक्कर मारी।

दुनिया में सबसे पहले दक्षिणी गोलार्ध के देशों में शुरू होती है गर्मी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पृथ्वी का मौसम हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो हमें अनगिनत रंग और विविधता की विभिन्नताओं में ले जाता है। गर्मी और सर्दी का मौसम इस समझ को और गहरा बनाता है, कि कैसे पृथ्वी के झुकाव ने हमारे जीवन का अनुसरण जानम, यह दो प्राकृतिक शक्तियों के साथ हमारी मित्रता की कहानी है। जब पृथ्वी का दक्षिणी गोलार्ध सूर्य की ओर झुका होता है, तो इसका प्रतिक्रियात्मक परिणाम होता है गर्मी का मौसम। दुनिया में सबसे पहले गर्मी का मौसम दक्षिणी गोलार्ध के देशों में शुरू होता है। ये देश हैं ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, चिली, अर्जेंटीना, और जाम्बिया। यहां पर गर्मी का मौसम 21 दिसंबर से शुरू होता है और 20 मार्च तक चलता है। जब दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी होती है, तो उत्तरी गोलार्ध में सर्दी का मौसम रहता है। जैसे ही दक्षिणी गोलार्ध में सर्दी का मौसम शुरू होता है, उत्तरी गोलार्ध में गर्मी का मौसम शुरू हो जाता है, जो 21 जून से लेकर 21 सितंबर तक रहता है। भारत उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, इसलिए यहां पर गर्मी का मौसम मार्च से लेकर जून तक होता है। इस समय के दौरान भारत में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ती है।

सुशांत मामले में सीबीआई ने रिया और उनके परिवार को दी क्लीनचिट, क्लोजर रिपोर्ट फाइल की

नई दिल्ली (एजेंसी)। फिल्म अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में सीबीआई ने रिया और उनके परिजनों को क्लीन चिट देते हुए मुंबई कोर्ट में क्लोजर रिपोर्ट फाइल कर दी है। सुशांत के पिता ने रिया चक्रवर्ती के ऊपर जो आरोप लगाए थे और रिया ने सुशांत के परिवार पर जो आरोप लगाए थे, दोनों केस में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की गई है। सीबीआई ने 2020 अगस्त में सुशांत केस टेकओवर करके जांच शुरू की थी। 4 साल की जांच के बाद सीबीआई ने क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की है। रिपोर्ट और सूत्रों के मुताबिक, रिया और उनके परिवार को क्लीन चिट दी गई है। सीबीआई को कोई ऐसा सबूत नहीं मिला, जिससे साबित हो सके कि किसी ने सुशांत को सुसाइड के लिए फोर्स किया था। सुशांत की मौत 2020 में हुई थी। करीब 4 साल 4 महीने के बाद सीबीआई ने क्लोजर रिपोर्ट फाइल की गई। सीबीआई ने रिया चक्रवर्ती और उनके परिवार को क्लीन चिट दे दी है। सीबीआई की जांच के मुताबिक, सुशांत सिंह राजपूत की मौत का कोई जिम्मेदार नहीं है। सुशांत सिंह राजपूत के परिवार के पास विकल्प है कि वे 'प्रोटेस्ट पेटिशन' मुंबई कोर्ट में दाखिल कर सकते हैं। सीबीआई ने एम्स के एक्सपर्ट से सुशांत के सुसाइड केस की जांच करवाई थी। सुशांत सुसाइड केस में एम्स फॉरेंसिक टीम ने किसी भी तरह की गड़बड़ी से इनकार किया था। जांच से पता चला था चैट्स में कोई छेड़छाड़ नहीं की गई थी। रिया चक्रवर्ती सुशांत की पूर्व गर्लफ्रेंड रही है और खुद सुशांत सुसाइड केस में गृहमंत्री अमित शाह से जांच की मांग कर चुकी है।

हमें बिखरा हुआ नहीं, बल्कि एकजुट दिखना चाहिए... कपिल सिब्बल ने इंडिया ब्लॉक को दी सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने रविवार को विपक्षी गठबंधन 'भारत' को एक खास सलाह दी। उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को सार्वजनिक रूप से 'एकजुट' दिखने की कोशिश करनी चाहिए। इसके साथ ही सिब्बल ने विपक्षी गठबंधन के लिए एक औपचारिक ढांचे की वकालत की जिसमें प्रवक्ता होने चाहिए जो गठबंधन के विचारों को सामने रख सकें।

सिब्बल ने 'पीटीआई-भाषा' के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में शामिल दलों को भविष्य के लिए एक सुसंगत नीति, वैचारिक ढांचे और कार्यक्रम की आवश्यकता है। हाल में राज्य विधानसभा चुनावों में 'इंडिया' के सहयोगी दलों के बीच हुई तकरार के बारे में पूछे जाने पर सिब्बल ने कहा, 'मेरा मानना है कि इसे (इंडिया) एकजुट दिखना चाहिए, न कि बिखरा हुआ जैसा कि यह आम तौर पर दिखाई देता है।' उन्होंने कहा, 'इन्हें (इंडिया में शामिल दलों को) एक सुसंगत नीति, एक सुसंगत वैचारिक ढांचा और भविष्य के लिए एक सुसंगत कार्यक्रम की आवश्यकता है।'

राज्यसभा सदस्य ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, 'मैं राज्य स्तर या राष्ट्रीय स्तर की बात नहीं कर रहा हूं। राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सोचने के तरीके में

एकरूपता होनी चाहिए और जब तक वह तंत्र स्थापित नहीं हो जाता और जब तक गठबंधन के प्रवक्ता नहीं होंगे जो इसके विचारों को सामने रख सकें, मुझे नहीं लगता कि यह बहुत प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सकता है।'

यह पूछे जाने पर कि क्या 'इंडिया' गठबंधन के लिए एक औपचारिक राजनीतिक ढांचा होना चाहिए, सिब्बल ने कहा कि वह लंबे समय से यह बात कहते आ रहे हैं। सिब्बल ने हालांकि विपक्षी गठबंधन के भविष्य को लेकर भरोसा जताया। केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का मुकाबला करने के लिए विपक्षी दलों ने 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) का गठन लोकसभा चुनाव से पूर्व किया था। मौजूदा बजट सत्र के दौरान पेश किए जा सकने वाले वक्फ (संशोधन) विधेयक और विपक्ष के पास मौजूद विकल्पों के बारे में पूछे जाने पर सिब्बल ने कहा कि यह देखना होगा कि राजग गठबंधन के सहयोगी इस मामले में क्या करते हैं क्योंकि भाजपा के पास बहुमत नहीं है। उन्होंने कहा, 'देखते हैं कि उनका रुख क्या है। बिहार में चुनाव होने वाले हैं। मुझे लगता है कि अगर वे विधेयक पेश करते हैं तो उन्हें इस बात की चिंता हो सकती है कि इसका बिहार में चुनाव पर क्या असर पड़ेगा।'

सिब्बल ने कहा, 'इसलिए मुझे नहीं पता कि इसका क्या नतीजा होगा। इसलिए हमें इंतजार करना चाहिए और देखना चाहिए। यदि विधेयक पारित हो जाता है तो निश्चित रूप से इसे चुनौती देने के इच्छुक लोगों के पास विकल्प मौजूद हैं।' विवादित परिसीमन मुद्दे पर सिब्बल ने कहा कि देश की राजनीति के लिए इसके बहुत गंभीर निहितार्थ हैं, इसीलिए तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक बैठक बुलाई और कांग्रेस सहित कई दलों के नेताओं ने इसमें भाग लिया।

ओडिशा में ओले गिरने से 2 की मौत, 17 राज्यों में बारिश की संभावना

नई दिल्ली। ओडिशा में पिछले 24 घंटों में आंधी, बारिश और बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि 67 लोग घायल हो गए और 600 से अधिक घर क्षतिग्रस्त हो गए। मौसम विभाग ने आगामी 24 घंटों में देश के 17 राज्यों में बारिश की संभावना जताई है, जिसमें बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गुजरात, केरल और नॉर्थ ईस्ट के राज्य शामिल हैं। मौसम विभाग के अनुसार, ओडिशा के जगतसिंहपुर, कटक, ढेंकनाल, अंगुल, देवगढ़ और सुंदरगढ़ जिलों में तेज हवाओं के साथ बिजली गिरने और ओले पड़ने की आशंका है। वहीं, बालासोर, भद्रक, जाजपुर, केंद्रपाड़ा, मयूरभंज और क्योंझर जिलों में भारी बारिश (7 से 11 सेमी) और आंधी की चेतावनी जारी की गई है।

राजस्थान में 25 मार्च से बदल जाएगा मौसम

राजस्थान में वेस्टर्न डिस्टर्बेंस और उत्तरी हवा चलने से तापमान सामान्य बना हुआ है। शुक्रवार को प्रदेशभर में गर्मी से राहत मिली और सभी शहरों में अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस से नीचे दर्ज किया गया। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, 25 मार्च से पश्चिमी हवा का प्रभाव बढ़ेगा, जिससे तापमान में वृद्धि होगी और गर्मी तेज होने लगेगी।

मध्यप्रदेश में अब बढ़ जाएगा तापमान

मध्यप्रदेश में रविवार से बारिश और ओले गिरने का सिलसिला थमने की संभावना है। अगले तीन दिनों में तापमान में 3 से 4 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोतरी हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार, 25-26 मार्च से एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा, जो प्रदेश के मौसम को प्रभावित करेगा।

लद्दाख में चीन के अवैध निर्माण पर भारत सख्त, कूटनीतिक विरोध दर्ज

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने संसद में जानकारी दी कि चीन ने लद्दाख से सटे इलाके में दो नए कस्बे (काउंटी) बसाए हैं। विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने लोकसभा में लिखित जवाब में कहा कि भारत चीन के अवैध कब्जे को स्वीकार नहीं करता और इस मुद्दे पर कड़ा कूटनीतिक विरोध जताया गया है।

गौरतलब है कि चीन ने पिछले साल दिसंबर में होटान प्रांत में दो नई काउंटी, हेआन और हेकांग, बनाने की घोषणा की थी। भारत ने इस पर तत्काल आपत्ति जताई थी, क्योंकि इन इलाकों का कुछ हिस्सा लद्दाख का अभिन्न अंग है।

भारत सरकार ने शुक्रवार को स्पष्ट किया कि चीन का यह दावा पूरी तरह अवैध है और इससे भारत की स्थिति पर कोई असर नहीं पड़ेगा। विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारत ने चीन की इस हरकत पर औपचारिक आपत्ति जताई है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसे उठाने की रणनीति बनाई जा रही है। इससे पहले भी चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर एक बड़ा बांध बनाने की योजना की घोषणा की थी, जिस पर भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी।

सीमा क्षेत्र में भारत का इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास जारी

भारत सरकार सीमा से सटे इलाकों में बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। सड़क, पुल और हवाई पट्टी का निर्माण तेज किया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य इन क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति देना और रणनीतिक मजबूती बढ़ाना है। भारत सरकार ने साफ कर दिया है कि चीन की यह गतिविधियां न तो मान्य हैं और न ही इनका कोई असर भारत की स्थिति पर पड़ेगा।

क्या है चीन की काउंटी प्रणाली?

चीन में काउंटी एक प्रशासनिक इकाई होती है, जिसे श्येन कहा जाता है। यह भारत की नगरपालिका के समान होती है, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्र दोनों शामिल हो सकते हैं।

बिहार में कांग्रेस को मजबूती प्रदान करने खड़गे और राहुल 25 को करेंगे अहम बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने हिंदी बेल्ट के दो प्रमुख राज्यों, उत्तर प्रदेश और बिहार, में अपनी पकड़ मजबूत बनाने के लिए खास कदम उठाए हैं। हालांकि, इन दोनों राज्यों में पार्टी फिलहाल क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन में है, लेकिन वह अपनी जमीनी मौजूदगी और संगठन को मजबूत करने की रणनीति पर काम कर रही है। खासकर बिहार में, जहां कांग्रेस लंबे समय से राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के साथ गठबंधन में रही है, वहां पार्टी अपनी स्वतंत्र पहचान को भी मजबूत करना चाहती है।

लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस को बिहार में तीन और उत्तर प्रदेश में छह सीटें मिली थीं। इन सीटों ने पार्टी में नई उम्मीद जगाई है। इसी कारण कांग्रेस नेतृत्व बिहार पर विशेष ध्यान दे रहा है। हाल ही में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने दो बार बिहार का दौरा किया है और अब 25 मार्च को दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी बिहार कांग्रेस को लेकर एक अहम बैठक करने जा रहे हैं। इस बैठक में आगामी विधानसभा चुनावों और संगठन को मजबूत करने की रणनीति पर चर्चा होगी।

बिहार कांग्रेस में नए चेहरे और नेतृत्व परिवर्तन

बिहार में कांग्रेस संगठन को नया स्वरूप देने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। राहुल गांधी ने अपने करीबी और युवा नेता कृष्णा अलावरू को बिहार कांग्रेस का प्रभारी नियुक्त किया है। इसके अलावा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद पर भी बदलाव किया गया है। भूमिहार नेता अखिलेश प्रसाद सिंह की जगह दलित नेता राजेश कुमार को बिहार कांग्रेस का नया अध्यक्ष बनाया गया है।

राहुल गांधी देशभर में जातिगत जनगणना को लेकर अभियान चला रहे हैं, और बिहार कांग्रेस की कमान दलित नेता को सौंपने को इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। इससे कांग्रेस समाज के एक बड़े वर्ग को साधने का प्रयास कर रही है।

युवा नेतृत्व और कन्हैया कुमार की भूमिका

कांग्रेस ने बिहार में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए युवा नेताओं को आगे बढ़ाने की योजना बनाई है। खासतौर पर कन्हैया कुमार को अहम जिम्मेदारी दी गई है। कन्हैया बिहार में 'पलायन रोको, रोजगार दो' अभियान के तहत पदयात्रा कर रहे हैं, जिसे जनता से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। कन्हैया कुमार को प्रदेश कांग्रेस की छात्र इकाई एनएसयूआई का प्रभारी भी बनाया गया है। हालांकि, उनके बढ़ते कद से पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेता असहज महसूस कर रहे हैं। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने शुरू में कन्हैया की भूमिका को लेकर असहमति जताई थी, लेकिन उन्हें अंततः पार्टी के फैसले को स्वीकार करना पड़ा।

पप्पू यादव को अहम जिम्मेदारी मिलने के संकेत

बिहार में कांग्रेस अपनी स्वतंत्र स्थिति को मजबूत करने के लिए पप्पू यादव को भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंप सकती है। पप्पू यादव की आरजेडी के साथ पुरानी राजनीतिक खींचतान रही है, और कांग्रेस इस समीकरण को अपने पक्ष में इस्तेमाल करने की योजना बना रही है।

आरजेडी के साथ गठबंधन और भविष्य की रणनीति

फिलहाल कांग्रेस बिहार में आरजेडी के साथ गठबंधन में बनी हुई है, लेकिन पार्टी अपनी मजबूत जमीनी पकड़ के आधार पर आगामी चुनावों में सम्मानजनक सीट बंटवारे की उम्मीद कर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस के इस नए प्रयोग से बिहार में उसकी स्थिति मजबूत हो सकती है।

मैं भी बनना चाहता हूं सीएम, तीन महीने में खत्म कर दूंगा भ्रष्टाचार

-पूर्णिया सांसद ने नीतीश को खलनायक बताने पर आरजेडी पर हमला बोला

पटना (एजेंसी)। बिहार के सीएम नीतीश कुमार को राजद द्वारा खलनायक बताए जाने पर आरजेडी और कांग्रेस के बीच का मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने तेजस्वी यादव पर हमला बोला है। यादव ने मीडिया से बातचीत में कहा कि नीतीश कुमार के साथ दो-दो बार सरकार में थे और अभी गठबंधन टूटे हुए एक साल भी नहीं हुआ है। उस दौरान सदन में महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक बयान दिया गया था, तब इन लोगों ने चुप्पी साध ली थी। तब पीएम मोदी ने भी आपत्ति जताई थी।

पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने कहा कि आरजेडी का यह कृत शर्मनाक है। राजनीति में मर्यादा बरकरार रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव ने जिससे सदन में राजनीति सीखी उसके खिलाफ ऐसे पोस्टर नहीं लगाने चाहिए। पप्पू यादव ने लालू प्रसाद यादव की बीमारी का हवाला देते हुए कहा कि वह भी कई मुद्दों पर बहक जाते हैं इसका मतलब उन्हें लेकर भी राजनीति की जाए?

सांसद पप्पू यादव ने कहा कि मुद्दों की राजनीति होनी चाहिए न कि इस तरह की शर्मनाक राजनीति होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला,

विशेष पैकेज नहीं दिया गया, पलायन नहीं रुका इन सब मुद्दों को क्यों नहीं उठाया जा रहा है। बता दें शनिवार को पटना आरजेडी कार्यालय के बाहर सीएम नीतीश कुमार का पोस्टर लगाया गया था जिसमें लिखा था में हूं खलनायक जिसको लेकर पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने आरजेडी पर हमला बालो है।

वही जब पप्पू यादव से पूछा गया कि क्या तेजस्वी यादव को इंडी गठबंधन में सीएम उम्मीदवार के रूप आप पसंद करेंगे तो इस पर उन्होंने दो टूक जवाब दिया कि उन्हें (पप्पू) को भी सीएम बनने का शौक है, लेकिन कांग्रेस को दरकिनार करके कोई सीएम नहीं बन सकता है। उन्होंने आगे कहा कि अगर वह मुख्यमंत्री बनते हैं तो वे तीन महीने के अंदर भ्रष्टाचार को समाप्त करेंगे, किसी भी कीमत पर दंगा नहीं होने देंगे और प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक नहीं होने देंगे। उन्होंने लालू यादव पर भी निशाना साधा और कहा कि खुद को किंग मेकर कहने वाले लोग जब यह कहते है कि हमने देवगौड़ा और गुजराल को पीएम बनाया तो उस वक्त 65 फीसदी आरक्षण क्यों नहीं लिया, निजी क्षेत्र में आरक्षण क्यों नहीं लागू करवा पाए।

दिल्ली पुलिस का खुलासा: बांगलादेशियों की भारत में गतिविधियों पर नजर

- बांग्लादेशी नागरिक भारतीय दस्तावेज हासिल कर कई तरह के रोजगार में शामिल हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। पुलिस ने हाल ही में 18 बांग्लादेशी रिमोट नेटवर्क के सदस्यों को दबोचा है, जिनका आरोप है कि वे भारत में खिलवाड़ कर रहे हैं। यह गिरफ्तारी कार्रवाई दिल्ली से लेकर बांग्लादेशी सीमा तक कई राज्यों में तहकीकात करा रही है। बांग्लादेशी नागरिकों की भारतीय पहचान के खिलाफ धारा 420, 467, और 468 के तहत कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने 18 बांग्लादेशियों की गिरफ्तारी के बाद दावा किया है कि बांग्लादेशियों की मदद करने वाले भारतीय नेटवर्क के लिए बड़ी समस्या बनने वाली है। पुलिस की टीमें बांग्लादेशी बॉर्डर से लेकर तमाम राज्यों में फैले बांग्लादेशी नेटवर्क का पता लगाने में जुट गई हैं। कई भारतीय विदेशी करेंसी एजेंट भी पुलिस के निशाने पर हैं। पुलिस की जांच में सामने आया कि बांग्लादेशी नागरिक भारतीय दस्तावेज हासिल कर अस्पताल, कैब ड्राइवर से लेकर अन्य कई तरह के रोजगार में शामिल हैं। एक बांग्लादेशी नागरिक तो भारतीय पासपोर्ट पर 22 बार विदेश यात्रा भी कर चुका था। साउथ डिस्ट्रिक्ट के एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वॉयड (एएटीएस) ने बांग्लादेशी नेटवर्क को पकड़ा तो खुलासा हुआ कि बड़े पैमाने पर इन्हें न सिर्फ भारतीय संरक्षण हासिल है बल्कि उनके द्वारा कमाए गए रुपये को उनके परिजनों तक बांग्लादेश भेजने के लिए विदेशी करेंसी एजेंट से लेकर निजामुद्दीन दरगाह का एक कर्मचारी भी सक्रिय है। एनसीआर में हाल में पकड़े गए बांग्लादेशी नेटवर्क को भी पुलिस ध्यान में रखकर अपनी जांच आगे बढ़ा रही है। डीसीपी ने बताया कि पुलिस ने सबसे पहले आरोपी ज्वेल इस्लाम नामक एक बांग्लादेशी को दबोचा जिसके पास भारतीय आधार कार्ड था। जांच में पता चला कि वह 2021 में भारत आया और कुछ दिन रहने के बाद फिर से वापस लौट गया। उसके बाद 2023 में वह दोबारा भारत आया। पूछताछ में ज्वेल इस्लाम ने खुलासा किया कि उसका भाई आलमगीर 2007 में भारत आया था। यहां उसने भारतीय महिला से शादी की और अपने बच्चों का सरकारी स्कूल में एडमिशन कराया। इस आधार पर उसके भाई को दबोचा गया। इसके बाद पुलिस ने क्लीनर का काम करने वाले मो. लतीफ खान और उसके भाई मो. नदीम को दबोचा। इसी क्रम में डिफेंस कॉलोनी स्थित एक अस्पताल में काम करने वाले रबीउल के साथ कोटला मुबारकपुर में कबाड़ी का काम करने वाले मो. मिजानुर रहमान को पकड़ा गया। कैब ड्राइवर का काम करने वाले मो. रेजाउल को भी पुलिस टीम ने दबोचा। वह भारतीय महिला से शादी कर भारतीय पासपोर्ट पर 22 बार बांग्लादेश जा चुका था। कमरुज्जमां नामक बांग्लादेशी जोमैटो में डिलिवरी बॉय का काम कर रहा था। डीसीपी के अनुसार, बांग्लादेशी नागरिकों को शरण देने, उनके पहचान संबंधी फर्जी दस्तावेज तैयार करने और हवाला के जरिए रुपये बांग्लादेश भेजने के आरोप में 8 भारतीय नागरिकों को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर में भी बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान भी होने की उम्मीद है।

चंद्रयान-3 ने चंद्रमा पर पानी और बर्फ की खोज की दिशा में बढ़ाया कदम

-चंद्रमा पर इंसानों के जीवन की संभावना की उम्मीद जगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चंद्रयान-3 ने चंद्रमा पर पानी और बर्फ की खोज की दिशा में एक अहम उपलब्धि हासिल की है। चंद्रमा की सतह तापीय भौतिकी प्रयोग से पानी और बर्फ की खोज में एक कदम बढ़ा दिया है। विक्रम लैंडर द्वारा किए गए इस प्रयोग ने चांद की उच्च अक्षांश वाली मिट्टी से असाधारण इन-सीटू तापमान माप प्रदान किए हैं, जिससे चांद के तापीय वातावरण के साथ पानी और बर्फ के जमा होने की संभावना जागी है।

इसरो के भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के दुर्गा प्रसाद ने मीडिया को बताया कि पानी और बर्फ का पता लगाना चंद्रमा पर इंसानों के जीवन की संभावना और आगे बढ़ाने का एक अहम कदम है। चांद के तापमान न केवल पानी और बर्फ को निर्धारित करते हैं, बल्कि यह अन्य वैज्ञानिक और अन्वेषण पहलुओं को भी प्रभावित करते हैं।।

चंद्रयान-3 मिशन से नई जानकारी को एक पत्रिका में प्रकाशित भी किया गया है। चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में तापमान मापे हैं जो कि अपेक्षित 330के से 25के ज्यादा था। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह वृद्धि लैंडर के सूरज की ओर झुके 6 डिग्री के स्थानीय ढलान पर स्थित होने के कारण बनी है। अवलोकनों के आधार पर टीम का कहना है कि 14 डिग्री से ज्यादा ढलान वाले बड़े पोलर क्षेत्रों में पानी और बर्फ के स्थिर जमा होने की संभावना है। ये क्षेत्र कम सौर विकिरण प्राप्त करते हैं और इसलिए तापमान कम बनाए रखते हैं, जिससे वे भविष्य के चांदी अन्वेषण और संभावित मानव जीवन के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं।

चांद पर पानी की खोज और इसके संभावित उपयोग के लिए कई देशों की अंतरिक्ष एजेंसियां नजरें गड़ाए हुए हैं। चंद्रयान-3 से प्राप्त परिणाम भविष्य के चांद मिशनों और स्थायी मानव जीवन की संभावनाओं को आकार देने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

मैटरनिटी ब्रेक के बाद लाइट, कैमरा, एक्शन को तैयार दीपिका पादुकोण

बॉलीवुड की टॉप अभिनेत्री में से एक दीपिका पादुकोण बीते साल सितंबर 2024 में मां बनी थीं। उन्होंने पति रणवीर सिंह के साथ बेटी का स्वागत किया था, जिसका नाम दुआ है। बेटी के जन्म के बाद फिलहाल दीपिका मैटरनिटी ब्रेक पर हैं और अब हाल ही में खबर सामने आई है कि वे जल्द ही फिल्म सेट पर वापसी करने वाली हैं। आखिरी बार उन्हें रोहित शेट्टी की फिल्म सिंघम अगेन में देखा गया था, जो दिवाली 2024 पर रिलीज हुई थी। हालांकि, प्रेग्नेंसी के कारण उन्होंने फिल्म के प्रमोशन में हिस्सा नहीं लिया। तब से ही उनकी वापसी को लेकर तमाम अटकलें लगाई जा रही थीं। अब, उनके फैंस के लिए एक अच्छी खबर आई है कि दीपिका जल्द ही फिल्म सेट पर वापसी कर रही हैं। दीपिका की अगली बड़ी फिल्म कल्कि 2898 ई. हैं, जिसमें प्रभास और अमिताभ बच्चन भी अहम भूमिकाओं में हैं। डायरेक्टर नाग अश्विन ने हाल ही में फिल्म और इसके शूटिंग शेड्यूल के बारे में अपडेट दिया है। पहले खबरें थीं कि कल्कि 2898 ई.का सीक्वल 2025 की गर्मियों में आएगा, लेकिन अब इसमें देरी होगी है। हाल ही में एक इवेंट के दौरान डायरेक्टर नाग अश्विन ने बताया कि सीक्वल की तैयारियां जोरों पर हैं और इसकी शूटिंग दिसंबर 2025 में शुरू होगी। इसका मतलब यह हुआ कि दीपिका का मैटरनिटी ब्रेक दिसंबर 2025 तक खत्म हो सकता है और वह शूटिंग के लिए लौट सकती हैं। दीपिका ने हाल ही में पठान 2 की घोषणा से भी सुर्खियां बटोरीं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, शाहरुख खान के साथ उनकी यह फिल्म अगले साल फ्लोर पर जा सकती है।

अभिषेक को मिला पहला बेस्ट एक्टर अवॉर्ड, गदगद हुए अमिताभ

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने अपने बेटे अभिषेक बच्चन की जमकर तारीफ की है। अभिषेक को हाल ही में पहला बेस्ट एक्टर अवॉर्ड मिला है। हाल ही में महानायक के बेटे और बॉलीवुड एक्टर अभिषेक बच्चन को शोशा रील अवॉर्ड्स 2025 में बेस्ट एक्टर (जूरी) अवॉर्ड मिला। बेटे को मिले इस सम्मान से वह गर्व से झूम उठे। उन्होंने एक पोस्ट शेयर किया और बेटे की सफलता की खुशी फैंस के साथ शेयर की। लेकिन इस पोस्ट में उन्होंने फिर उत्तराधिकारी की बात कर डाली। हाल ही में अभिषेक बच्चन को एक अवॉर्ड्स 2025 में बेस्ट एक्टर (जूरी) अवॉर्ड मिला। उन्हें ये अवॉर्ड 2024 में रिलीज़ हुई फिल्म 'आई वांट टू टॉक' के लिए मिला। वीडियो के साथ, अमिताभ बच्चन ने एक प्यारा नोट भी लिखा और अपने बेटे को सच्चा उत्तराधिकारी कहा। अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर अमिताभ बच्चन ने एक वीडियो शेयर किया, जिसमें अभिषेक अवॉर्ड लेते और सभी का धन्यवाद करते नजर आ रहे हैं। वीडियो शेयर कर उन्होंने कैप्शन में लिखा, 'मेरे बेटे, बेटे होने से मेरे उत्तराधिकारी नहीं होंगे। जो मेरे उत्तराधिकारी होंगे वो मेरे बेटे होंगेज्हरिवंश राय बच्चन। अभिषेक का भाषण भावुक कर देने वाला था, जिसमें उन्होंने शूजीत सरकार और अपने सह-कलाकारों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा, यह मेरा पहला बेस्ट एक्टर अवॉर्ड है। मैं सम्मानित जूरी का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे योग्य समझा। इसका पूरा श्रेय शूजीत दा को जाता है, जो एक अद्भुत निर्देशक हैं। मैं इस सम्मान को अपनी दो शानदार ऑन-स्क्रीन बेटियों, अहिल्या और पर्ल के साथ साझा करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझे बहुत अच्छा दिखाया। यहां मौजूद सभी साथी कलाकारों और फिल्म निर्माताओं को धन्यवाद, आपका काम मुझे हर दिन खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनने के लिए प्रेरित करता है।

बॉलीवुड की नायिकाओं को मिल रही साउथ इंडस्ट्री में भारी फीस

बॉलीवुड की नायिकाओं को साउथ इंडस्ट्री में बड़े बजट की फिल्मों में काम करने के लिए भारी भरकम फीस दी जा रही है। 'एनिमल' में खलनायक की भूमिका निभाने के बाद बॉबी देओल दक्षिण भारत में काफी लोकप्रिय हो गए हैं !बॉबी अब लगातार साउथ की फिल्मों में नजर आ रहे हैं। उनकी अगली फिल्म 'सनी जाट' का निर्माण और निर्देशन भी दक्षिण भारतीय फिल्मकारों द्वारा किया जा रहा है। इसी तरह, साउथ फिल्म निर्माता बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस को भी आकर्षक ऑफर्स दे रहे हैं। हाल ही में खबर आई थी कि एसएस राजामौली द्वारा निर्देशित महेश बाबू की फिल्म स्स्स्स्स29 के लिए प्रियंका चोपड़ा को 30 करोड़ रुपये की भारी फीस दी गई है। ऐसा माना जा रहा है कि प्रियंका इस फिल्म में विलेन का किरदार निभा रही हैं, और यह एक पैन-वर्ल्ड प्रोजेक्ट है, जिसका बजट 1000 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। अब इसी तरह की खबरें कियारा आडवाणी को लेकर भी आ रही हैं। कियारा, जो पहले ही बॉलीवुड में कई हिट फिल्में दे चुकी हैं, अब साउथ के सुपरस्टार यश की फिल्म 'टॉक्सिक' के लिए साइन की गई हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस फिल्म के लिए उन्हें 15 करोड़ रुपये की फीस दी जा रही है। हालांकि, इस खबर की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन अगर यह सही साबित होती है, तो कियारा भी बॉलीवुड की सबसे ज्यादा फीस लेने वाली अभिनेत्रियों में शामिल हो जाएंगी। गौरतलब है कि कियारा आडवाणी की पिछली फिल्म 'गेम चेंजर' बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाई थी। इसके बावजूद, उनकी स्टार पावर बरकरार है। मां बनने की खबर के बाद उन्होंने फरहान अख्तर की 'डॉन 3' छोड़ दी थी, लेकिन फिर भी बड़े बजट की फिल्मों में उनकी मांग बनी हुई है। इसके अलावा, कियारा 'वॉर 2' में भी नजर आएंगी, जिसमें उनके साथ ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर हैं। ऐसे में 2025 कियारा के लिए करियर का बड़ा साल साबित हो सकता है। वहीं, दीपिका पादुकोण ने 'कल्कि 2898 एडी' के लिए 20 करोड़ रुपये की फीस ली थी, और अब कियारा भी इसी लिस्ट में शामिल हो सकती हैं। साउथ इंडस्ट्री का यह ट्रेंड यह दिखाता है कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की टॉप हीरोइन्स अब सिर्फ बॉलीवुड तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनकी डिमांड पूरे देश और ग्लोबल सिनेमा में बढ़ रही है। मालूम हो कि दक्षिण भारतीय फिल्म निर्माता अब हिंदी फिल्मों के बड़े सितारों को अपनी फिल्मों में कास्ट कर रहे हैं, जिससे उनकी फिल्मों को उत्तर भारतीय बाजार में भी बड़ी सफलता मिल रही है।

पैसेंजर्स की परवाह करने का दावा करने वाली एयरलाइन में हमदर्दी कहां है: लीजा रे

हाल ही मेंमशहूर अभिनेत्री लीजा रे ने एक एयरलाइन पर असंवेदनशील होने का आरोप लगाया, जिसके बाद सोशल मीडिया पर इस मामले ने तूल पकड़ लिया। एक पोस्ट साझा करते हुए लीजा रे ने बताया कि उनके 92 वर्षीय बीमार पिता की हालत के चलते उन्हें अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी, लेकिन डॉक्टर का प्रमाणपत्र जमा करने के बावजूद एयरलाइन ने किसी भी तरह की रियायत देने से इनकार कर दिया। उन्होंने लिखा, फिर से शुरू हो गया। मेरे पिता 92 साल के हैं और बीमार हैं। मुझे उनकी बीमारी के कारण ट्रैवल कैंसिल करना पड़ा। डॉक्टर का लेटर सबमिट करने के बाद भी छूट देने से इंकार कर दिया गया? ये कैसे संभव है? पैसेंजर्स की परवाह करने का दावा करने वाली एयरलाइन में हमदर्दी कहां है???उनकी इस पोस्ट के वायरल होते ही लोगों ने एयरलाइन की नीति और रवैये की आलोचना करनी शुरू कर दी। बढ़ते विवाद को देखते हुए एयरलाइन ने भी जवाब दिया और लीजा रे से उनके ईमेल आईडी या केस आईडी की जानकारी मांगी ताकि वे इस मामले की समीक्षा कर सकें। एयरलाइन ने कहा, डियर लीजा रे, हम आपकी चिंता से हमदर्दी रखते हैं और आपके पिता के जल्द ठीक होने की कामना करते हैं। कृपया हमें वह ईमेल एड्रेस या केस आईडी बताएं, जिससे आपने संपर्क किया था, ताकि हम इस पर गौर कर सकें। बाद में एयरलाइन ने एक और पोस्ट किया, कृपया हमें कुछ समय दें। हम दी गई जानकारी की समीक्षा कर रहे हैं और आपकी चिंता को जल्द से जल्द दूर करने का प्रयास करेंगे। आपसे अनुरोध है कि अपनी संपर्क जानकारी और सुविधाजनक समय डीएम के जरिए साझा करें। बात करें लीजा रे के करियर की, तो उन्होंने 90 के दशक में मॉडलिंग से अपनी शुरुआत की थी और कई विज्ञापनों में काम किया। साल 2001 में उन्होंने फिल्म कसूर से बॉलीवुड में कदम रखा, जिसके बाद दीपा मेहता की फिल्म वॉटर से उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। उन्होंने कनाडाई फिल्मों में भी अभिनय किया है। कैंसर से जंग जीतने के बाद उन्होंने लेखन की दुनिया में भी कदम रखा।

शादी और बच्चे जीवन की अनिवार्यता नहीं: किम शर्मा

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेत्री किम शर्मा ने शादी और मातृत्व को लेकर अपने विचार साझा किए। एक्ट्रेस ने कहा कि मां बनना उनकी योजना का हिस्सा नहीं है। किम का मानना है कि शादी और बच्चे को जीवन की अनिवार्यता मानने की कोई जरूरत नहीं है, बल्कि यह हर व्यक्ति की निजी पसंद होनी चाहिए। एक इंटरव्यू में किम शर्मा ने पारंपरिक विवाह और माता-पिता बनने को लेकर समाज के नजरिए पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा, 'हमारे समाज में शादी को इस तरह देखा जाता है कि एक व्यक्ति के साथ पूरी जिंदगी बितानी ही होगी। खाना बनाना, घर संभालना, बच्चों का टिफिन तैयार करना—ये सब अनिवार्य मान लिया जाता है। लेकिन मैं कहती हूं कि अगर आप इसे कुछ सालों तक अनुभव करना चाहते हैं तो करें, अगर पूरी जिंदगी जीना चाहते हैं तो करें, और अगर नहीं करना चाहते तो मत करें।' जब उनसे यह पूछा गया कि क्या वह शादी करके बच्चे पैदा करने की योजना बना रही हैं, तो उन्होंने तुरंत असहमति जताई और कहा कि मां बनना उनकी प्राथमिकता नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चे पैदा करने का मतलब यह नहीं होता कि वे बुढ़ापे में माता-पिता की देखभाल करेंगे। किम ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'मैं देखना चाहती हूं कि आज के दौर में कितने बच्चे अपने माता-पिता के बुढ़ापे में उनके पैर दबा रहे हैं। सच तो यह है कि बहुत ही कम बच्चे अपने माता-पिता के लिए मौजूद होते हैं। माता-पिता अपनी पूरी जिंदगी अपने बच्चों को देते हैं, लेकिन जब उन्हें जरूरत होती है तो बच्चे अक्सर व्यस्त होने का बहाना बना लेते हैं।' किम का मानना है कि माता-पिता बनना कोई लेन-देन का सौदा नहीं है, जहां एक व्यक्ति यह सोचकर बच्चा पैदा करे कि वह उसका बुढ़ापे में सहारा बनेगा। उन्होंने कहा, अगर कोई यह सोचकर बच्चे पैदा कर रहा है कि वह बुढ़ापे में उसकी देखभाल करेगा, तो यह बेहद गलत मानसिकता है। बच्चे इस दुनिया में इसलिए नहीं आते कि वे किसी का कर्ज चुकाएं।'

सोहा ने बिल गेट्स से अपनी पुस्तक 'सोर्स कोड' पर लिया ऑटोग्राफ

हाल ही में अमेरिकी बिजनेसमैन और परोपकारी बिल गेट्स के साथ बॉलीवुड एक्ट्रेस सोहा अली खान ने एक खास मुलाकात की। इस दौरान सारा ने उनकी किताब सोर्स कोड पर ऑटोग्राफ भी लिया। एक्ट्रेस ने अपनी इस मुलाकात की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं और गेट्स की सोच और सकारात्मकता की तारीफ की। सोहा ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लिखा, यह मानना कि दुनिया बदतर होती जा रही है, कि हम अत्यधिक गरीबी और बीमारी का समाधान नहीं कर सकते, सिर्फ गलत नहीं है, बल्कि यह हानिकारक भी है। किसी समझदार, धनी, उदार, समाधान-उन्मुख और सबसे महत्वपूर्ण रूप से आशावादी व्यक्ति से मिलकर और उनकी पुस्तक पर हस्ताक्षर प्राप्त कर बहुत खुशी हुई!। इस बीच, सोहा अली खान अपनी फिटनेस को लेकर भी सुर्खियों में बनी हुई हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर हाई-इंटेंसिटी वर्कआउट का एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह पुश-अप्स, जंपिंग जैक, एब क्रंच, वन-लेग लंज और ट्रेडमिल रनिंग करती नजर आईं। उन्होंने इस पोस्ट के साथ कैप्शन दिया, सप्ताह भर जोर लगाते हुए... वर्कआउट वेडनसडे, जिससे उनके प्रशंसकों को फिटनेस के प्रति प्रेरणा मिली। वहीं, अगर उनके वर्कफ्रंट की बात करें, तो सोहा जल्द ही छोरी 2 में नजर आएंगी। यह फिल्म 2021 में आई हॉरर-ड्रामा 'छोरी' का सीक्वल है, जिसमें नुसरत भरूचा मुख्य भूमिका में थीं। विशाल फुरिया के निर्देशन में बनी इस फिल्म का निर्माण टी-सीरीज, क्रिप्ट टीवी और अबुंदंतिया एंटरटेनमेंट के बैनर तले किया गया है। इस फिल्म में मीता वशिष्ठ, पल्लवी अजय, यानि भारद्वाज, राजेश जैस और सौरभ गोयल भी अपनी पिछली भूमिकाएं दोहराते नजर आएंगे। फैंस जहां सोहा की इस खास मुलाकात को लेकर उत्साहित हैं, वहीं उनकी आगामी फिल्म 'छोरी 2' को लेकर भी काफी उत्सुकता बनी हुई है।गौरतलब है कि बिल गेट्स तीन साल में तीसरी बार भारत आए हैं और इस दौरान वह राजनीतिक और सामाजिक रूप से प्रभावशाली हस्तियों से मुलाकात कर रहे हैं। उनकी इस यात्रा को लेकर काफी चर्चा हो रही है, क्योंकि वह भारतीय विकास और परोपकार से जुड़े कई विषयों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

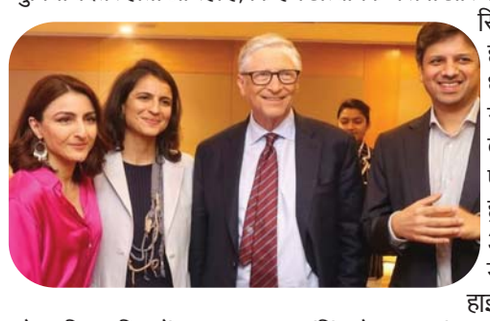

जेल में बिताए दिनों को लेकर एजाज खान ने किए चौंकाने वाले खुलासे

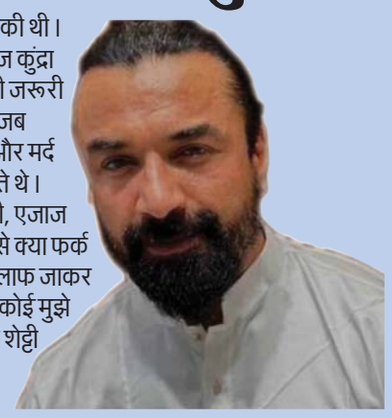

कुछ समय पहले ड्रग्स मामले में गिरफ्तार हुए अभिनेता एजाज खान ने दावा किया कि उन्होंने जेल में रहते हुए शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान और शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा की मदद की थी। अभिनेता एजाज खान ने जेल में बिताए अपने दिनों को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। एक इंटरव्यू में एजाज ने बताया कि जब वह मुंबई की आर्थर रोड जेल में थे, तब आर्यन और राज कुंद्रा भी वहां मौजूद थे। उन्होंने कहा, हां, आर्यन भी वहीं था। हमने शाहरुख के बेटे को पानी, सिगरेट सब दिया। जेल में इससे ज्यादा कोई क्या दे सकता है? वहां गुंडों और माफियाओं से बचाना भी जरूरी होता है, वरना पैसा देना पड़ता। आर्यन खान कॉमन बैरक में था, जबकि मैं और राज कुंद्रा बैरक नंबर 6 में थे। जेल में 3,500 से ज्यादा अपराधी हैं, वहां हर किसी से बचना मुश्किल होता है। जब एजाज से पूछा गया कि क्या जेल से बाहर आने के बाद उनकी आर्यन से मुलाकात हुई, तो उन्होंने कहा, कोई मीटिंग नहीं हुई। ये ऐसा ही है कि नेकी कर दरिया में डाल। लेकिन जो खानदानी और मर्द आदमी होगा, वो तुम्हें कभी नहीं भूल सकता। एजाज ने राज कुंद्रा के बारे में भी कई बातें साझा कीं। उन्होंने बताया कि जेल में रहते हुए राज अक्सर उनके जरिए पानी, ब्रेड और बिस्किट मांगते थे। सुपरिंटेंडेंट ने राज को साफ मना कर दिया था कि कोई उसे बिसलेरी नहीं देगा, सिर्फ नॉर्मल पानी मिलेगा। लेकिन वो अगर नॉर्मल पानी पीता तो बीमार हो जाता। इसलिए मैंने उसकी मदद की, एजाज ने कहा। हालांकि, जेल से बाहर आने के बाद राज कुंद्रा के व्यवहार से एजाज नाराज दिखे। उन्होंने कहा, राज ने एक इंटरव्यू में कहा था कि एजाज खान ने उसकी बहुत मदद की। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? उसने जेल में हुए जुल्म पर एक फिल्म बनाई, लेकिन उसमें मेरा रोल ही काट दिया। मेरा किरदार तो रखता, ताकि दुनिया देखती कि मैंने उसके लिए कितनी दुश्मनी ली, सबके खिलाफ जाकर उसकी मदद की। राज कुंद्रा को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए एजाज ने आगे कहा, मैंने उसे जेल में ब्रेड, बटर, बिस्किट दिया, लेकिन उसकी कोई कीमत नहीं। अगर बाहर आकर कोई मुझे पांच करोड़ भी दे, तो वो कम होगा, लेकिन उसने तो पांच रुपये भी नहीं दिए। उन्होंने यह भी कहा कि राज कुंद्रा ने जेल में जो समय उनके साथ बिताया, उतना शायद उन्होंने अपनी पत्नी शिल्पा शेट्टी के साथ भी नहीं बिताया होगा। हम वहां 24 घंटे साथ रहते थे। दुख होता है कि आज वो बड़ी-बड़ी पार्टियां करता है, लेकिन मुझे कभी नहीं बुलाता। वो उन लोगों को बुलाता है, जो उसे बदनाम कर रहे थे।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक अजय कुमार पासवान द्वारा, आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटरा दीना बाग लाल कुआँ दिल्ली- 110006 से मुद्रित व फलैट न0.9 सेंकेण्ड फलोर गली न0.-17,21 चन्दन विहार वेस्ट संत नगर बुराडी दिल्ली-110084 से प्रकाशित संपादक- नीरज कुमार शर्मा, सह संपादक- अमरनाथ भक्ता